सूरति मिश्र कृत

कामधेनु

दयाशंकर शुक्ल

सूरति मिश्र
कृत

कामधेनु

सम्पादक
दयाशंकर शुक्ल एम०ए०, पी-एच०डी०
प्राध्यापक—हिन्दी विभाग
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

प्रकाशक
कात्यायन प्रकाशन
एफ/४ अध्यापक कुटीर
प्रतापगंज, बड़ौदा

प्रकाशिका
श्रीमती इन्दु शुक्ल
कात्यायन प्रकाशन, बड़ौदा

मूल्य
चार रुपये

प्रथम संस्करण
१९७२

वितरक
जवाहर पुस्तकालय, असकुण्डा बाजार, मथुरा

मुद्रक
हिन्दुस्तानी आर्ट कॉटेज, लखनऊ

पूज्य गुरुवर डॉ० भगीरथ जी मिश्र

को

सादर समर्पित

भूमिका

आचार्य सूरति मिश्र की न तो अभी तक समस्त कृतियाँ ही उपलब्ध हो पाई हैं और न उपलब्ध रचनाओं का सम्यक् विवेचन ही हो सका है। हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों में केवल पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अपने 'हिन्दी साहित्य का अतीत' ग्रंथ में इनके साथ न्याय करने का प्रयत्न किया है। आचार्य शुक्ल ने उनके केवल सात रीति-ग्रंथों का उल्लेख किया है। उन्होंने एक ही ग्रंथ 'रस रत्न' को 'रस रत्नमाला' के नाम से दूसरी बार दे दिया है और केशव की रसिक-प्रिया की टीका 'रसग्राहक चंद्रिका' को भी रीति-ग्रंथों में सम्मिलित कर लिया है। मिश्र बंधुओं का विचार है कि उनकी 'बिहारी सतसई' की टीका 'अमर-चन्द्रिका' जोधपुर-नरेश के नाम पर रची गयी थी जबकि वास्तविकता यह है कि जोधपुर के दीवान का नाम अमरसिंह था—राजा का नाम तो अभयसिंह था।

कहने का तात्पर्य यह है कि आचार्य सूरति मिश्र के काल-निर्णय और कृतित्व के विषय में अभी तक अनेक भ्रांत धारणाएँ चली आ रही हैं। विद्वान् इतिहासकारों में किसी कवि की रचनाओं के क्रम या काव्य-सौष्ठव के विषय में मतभेद की संभावनाएँ हो सकती हैं, किंतु किसी कवि विशेष की उपलब्ध रचनाओं का सम्यक् अध्ययन किये बिना भ्रांतियों का पोषण करते रहना समीचीन प्रतीत नहीं होता।

इस दृष्टि से डॉ० दयाशंकर शुक्ल का शोधकार्य निश्चय ही अभिनंदनीय है। उन्होंने युक्ति-प्रमाण-पूर्वक सिद्ध किया है कि आचार्य सूरति मिश्र के स्वतंत्र रीति-ग्रंथों, काव्य-ग्रंथों, टीकाओं तथा अनुवादों की संख्या २० और यदि कवि-सिद्धान्त एवं काव्य-सिद्धान्त ग्रंथों को पृथक्-पृथक् मानें, जैसा कि डॉ० शुक्ल ने 'कामधेनु' की प्रस्तावना में माना है, तो २१ हो जाती है। इनमें से १५ ग्रंथों की उपलब्धि का उल्लेख 'सरोज-सर्वेक्षण' में मिलता है। रामचरित्र तथा कृष्णचरित्र भी भरतपुर के राजभांडार से प्राप्त हो चुके हैं। १८ वें ग्रंथ 'कामधेनु' को प्रकाश में लाने का श्रेय डॉ० शुक्ल को है ही। अब केवल 'कवि-सिद्धान्त,' 'भक्तमाला' तथा 'श्रीनाथ विलास' ग्रंथ अनुपलब्ध रह जाते हैं।

डॉ० दयाशंकर शुक्ल, हिन्दी विभाग, बड़ौदा विश्वविद्यालय के एक वरिष्ठ प्राध्यापक ही नहीं, कुशल शोध-निर्देशक भी हैं। पिछले पाँच-छह वर्षों से वे गुजरात के विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथ-भांडारों में हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी भाषाओं की कृतियों के अध्ययन तथा अप्राप्य सामग्री की शोध में संलग्न हैं। उन्होंने 'कामधेनु' की प्रस्तावना में सर्वप्रथम, अन्तःसाक्ष्य और बहिःसाक्ष्य के आधार पर आचार्य सूरति मिश्र के जीवन तथा कृतित्व संबंधी उपलब्ध तथ्यों का आकलन किया है, विभिन्न इतिहासकारों द्वारा उत्पन्न सूरति मिश्र के जीवन तथा साहित्य-विषयक भ्रांतियों का नम्रतापूर्वक निराकरण किया है और कवि के जन्मकाल तथा रचना-काल के संबंध में नये तथ्य प्रस्तुत किये हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'रामचरित्र' एवं 'कृष्णचरित्र' की रचना की समकालीनता एवं 'कवि-सिद्धान्त' और 'काव्य-सिद्धान्त' के पृथक् अस्तित्व पर भी तर्क-सम्मत विचार किया है।

'कामधेनु' आचार्य सूरति मिश्र का छन्दःशास्त्र विषयक ग्रंथ है, जिसमें ७१ प्रकार के ६४ छंद मिलते हैं। छंदों के अतिरिक्त इसमें १५ पदों का भी सन्निवेश है जिसमें अनेक रागों के नाम दिये हुए हैं। विद्वान् संपादक ने सूरति मिश्र द्वारा प्रयुक्त छंदों के नियमों तथा उनमें प्राप्त त्रुटियों का विषय-मर्मज्ञ की दृष्टि से निर्देश कर, संपादन-कौशल का भी परिचय दिया है।

रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि, टीकाकार, अनुवादक, लक्षणग्रंथकार आचार्य सूरति मिश्र के छन्दःशास्त्र विषयक 'कामधेनु' ग्रंथ के इस विद्वत्ता-पूर्ण संपादन तथा उसकी प्रस्तावना के लिए डॉ० शुक्ल साधुवाद के पात्र हैं। मुझे आशा है कि मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य के रसिक इस ग्रंथ का स्वागत करेंगे।

नगेन्द्र

आचार्य, हिन्दी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली—७
दिनांक : ६-३-१९७२

आमुख

हिन्दी के समस्यापूर्ति काव्य पर शोध-कार्य करते समय रीतिकालीन कवियों के काव्य का अध्ययन करने का अधिक अवसर मिला था। उस समय तक सूरति मिश्र की किसी सम्पूर्ण रचना का अध्ययन तो मैंने नहीं किया था, केवल साहित्य के इतिहास ग्रंथों में उद्धृत सामग्री ही देखी थी। कालांतर में म० स० विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में संग्रहीत हस्तलिखित ग्रंथों में सूरति मिश्र कृत भक्ति विनोद, कृष्णचरित्र तथा रामचरित्र ग्रंथ देखने को मिले। इसी बीच अपनी शोध-योजना के हेतु मुझे गुजरात के अनेक संग्रहालयों को देखने का अवसर मिला जिनमें हिन्दी की विपुल ग्रंथ-राशि संकलित देखी। इन संग्रहालयों में सूरति मिश्र के अनेक ग्रंथ—रसरत्न, अलंकार-माला, अमरचंद्रिका तथा काव्य-सिद्धान्त मैंने देखे। इनमें से कुछ की कई-कई प्रतियाँ भी मुझे देखने को मिलीं। मैंने इन ग्रंथों में से कुछ की प्रतिलिपियाँ कर लीं तथा इनका पाठ-भेद भी अंकित कर लिया। सूरति मिश्र की सर्वथा अप्राप्य कृति 'कामधेनु' भी मुझे बड़ौदा के श्री आत्माराम जैन ज्ञानमन्दिर में प्राप्त हो गई। इस ग्रंथ की भी मैंने प्रतिलिपि कर ली। यह दुर्लभ कृति अपने आकार में लघु तथा प्रकार में मुझे सर्वथा नवीन प्रतीत हुई अतएव मैंने इसका सम्यक् अध्ययन भी कर लिया। सूरति मिश्र की उपर्युक्त रचनाओं के अध्ययन से मेरे मन में यह प्रेरणा हुई कि मैं इनके सभी ग्रंथों का सम्पादन करूँ। इस दिशा में मैं बराबर प्रयत्नशील भी रहा, किन्तु इसी बीच मुझे ज्ञात हुआ कि सूरति मिश्र के ग्रंथों के सम्पादन तथा शोध में कुछ विद्वान् कई वर्षों से संलग्न हैं अतएव मैंने अपना निर्णय बदल दिया। जैसा कि मैंने ऊपर कहा है कि 'कामधेनु' विषयक मेरा अध्ययन लगभग पूर्ण हो चुका था अतएव मैंने इस ग्रंथ को सम्पादित करने का निश्चय किया और आज मुझे इस बात का संतोष है कि 'कात्यायन प्रकाशन' की ओर से प्रकाशित होकर यह ग्रंथ विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत है।

कामधेनु ग्रंथ के अध्ययन से सूरति मिश्र की चमत्कारिक प्रतिभा का आभास मिलता है। इस युग की काव्य-प्रतिभा मुख्यतः चमत्कार-प्रधान है। कवियों ने विभिन्न प्रकार के चित्र काव्य की रचना के द्वारा अपनी प्रतिभा का प्रभाव राज-दरबारों तथा विद्वन्नगोष्ठियों में डाला था। संस्कृत-साहित्य में चमत्कार प्रधान काव्य-रचना की विस्तृत परम्परा रही है। कामधेनु ग्रंथ में सूरति मिश्र ने एक छंद से अनेक छंद निःसृत होने की जो पद्धति बतलाई है वह हिन्दी काव्य के परिप्रेक्ष्य में नितांत अधुना होते हुए भी संस्कृत-साहित्य की अनुवर्तिनी ही है। भोज ने अपने 'शृंगार-प्रकाश' ग्रंथ में एक श्लोक से लक्षाधिक श्लोक निकालने की विवेचना की है।

सूरति मिश्र की कामधेनु रचना हिन्दी साहित्य के इतिहास तथा शोध-क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण एवं अभिनव कृति है जिसकी अद्यावधि किसी ग्रंथ में कोई चर्चा नहीं मिलती।

मैंने कामधेनु ग्रंथ की प्रस्तावना में विभिन्न ग्रंथों में उपलब्ध सूरति मिश्र संबंधी सामग्री की समीक्षा करते हुए उनके संबंध में कामधेनु ग्रंथ पर आधारित अपने कुछ निष्कर्ष निकाले हैं यथा-कवि-सिद्धान्त और काव्य-सिद्धान्त पृथक् ग्रंथ हैं, रामचरित्र और कृष्णचरित्र दोनों समकालीन रचनाएँ हैं। उनमें रचनाकाल का अधिक अंतराल नहीं रहा होगा तथा सूरति मिश्र का जन्म संवत् १७२० वि० के आस-पास होना चाहिए। विद्वानों के समक्ष मैंने यह निष्कर्ष अत्यंत विनम्र भाव से प्रस्तुत किये हैं। विद्वद्जन इनसे सहमत ही होंगे इसकी मुझे पूर्ण अपेक्षा नहीं है क्योंकि शोध का क्षेत्र विस्तृत है और ज्ञान की कोई इयत्ता नहीं !

आशा है हिन्दी-साहित्य के मनीषी विद्वान् इस छोटी-सी सम्पादित कृति को स्नेह एवं सौमनस्य से ग्रहण करके मुझे इस दिशा में उत्साहित करेंगे।

इस ग्रंथ के सम्पादन में मैं अपने सम्माननीय मित्र डॉ० अरुणोदय जानी (प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग, म० स० विश्वविद्यालय,

बड़ौदा) का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने मेरी समस्याओं का समाधान ही नहीं किया वरन् अपनी विद्वत्तापूर्ण सम्मति प्रदान करके इस ग्रंथ को अलंकृत भी किया है। मैं आदरणीय डॉ० मदनगोपाल जी गुप्त (अध्यक्ष-हिन्दी विभाग, म० स० विश्वविद्यालय, बड़ौदा) का भी अत्यन्त अनुगृहीत हूँ जो मुझे शोध-क्षेत्र में कार्य करने के लिए बराबर प्रेरित करते रहे हैं। इस ग्रंथ के संबंध में अपनी सम्मति प्रदान करके भी उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया है। मैं हिन्दी साहित्य के मनीषी विद्वान् परम श्रद्धेय डॉ० नगेन्द्र जी के प्रति किन शब्दों में आभार प्रकट करूँ जिन्होंने अपने व्यापृत जीवन में से कुछ क्षण निकालकर प्रस्तुत ग्रंथ की भूमिका लिखने की महती कृपा की है।

मैं कलाविद् श्री विष्णुकुमार जी भट्ट (प्राध्यापक ललित कला संकाय, म० स० विश्वविद्यालय, बड़ौदा) का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने 'कामधेनु' के मुखपृष्ठ को अलंकृत किया है।

अंत में मैं उन सभी संग्रहालयों के अधिकारियों का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिनके हस्तलिखित ग्रंथों का उपयोग मैंने प्रस्तुत ग्रंथ में किया है। सर्वाधिक कृतज्ञ मैं श्री आत्माराम जैन ज्ञानमन्दिर, बड़ौदा के अधिकारियों का हूँ जिनकी कृपा से प्रस्तुत ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति मुझे उपलब्ध हो सकी। इस संबंध में मैं अपने आदरणीय मित्र श्री कंचनभाई परीख का नाम कैसे विस्मरण कर सकता हूँ जिन्होंने ग्रंथ उपलब्ध कराने में सेतु का कार्य किया।

बड़ौदा
१२-३-७२

दयाशंकर शुक्ल

प्रस्तावना

सूरति मिश्र हिन्दी-साहित्य के एक महान् स्रष्टा थे । उन्होंने हिन्दी साहित्य के भण्डार को वहुविध रूपों में भरा था । रीतिकाल की परिधि में आवद्ध सूरति मिश्र ने भक्ति, भक्त, भगवंत का आश्रय कभी नहीं छोड़ा । वे अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिवद्ध होकर भी सदैव स्वच्छन्द भाव से साहित्य सृजन में लगे रहे । उनका साहित्य रीति-कालीन काव्य की विशिष्टताओं से अभिमंडित है । उनमें रीतिवद्धता का पूर्ण प्रभाव देखा जा सकता है । लक्षण और उदाहरण दोनों को साथ-साथ रखने की परम्परा का उन्होंने अपने ग्रंथों में दृढ़ता से पालन किया है तथापि उनके कुछ ग्रंथ[1] उनकी स्वच्छंद काव्य-लेखन तथा भक्ति-भाव की प्रवृत्ति के प्रमाण हैं । उन्होंने अपने ग्रंथों में स्पष्ट स्वीकार किया है कि जव तक 'हरिनाम' से कोई ग्रंथ अंकित न हो तव तक उसकी कोई सार्थकता नहीं है । उनकी यह 'स्वीकृति' किसी 'सुमिरन को वहानो' की नहीं, अपितु सच्चे हृदय की अनुभूति का प्रकाशन है ।

सूरति मिश्र एक साथ कवि, आचार्य, टीकाकार तथा अनुवादक सभी कुछ थे । सभी क्षेत्रों में उन्हें समान दक्षता प्राप्त थी, किन्तु हिन्दी साहित्य के इतिहासों में उनका आचार्य रूप एवं टीकाकार का स्वरूप ही अधिक उजागर हुआ है । सूरति मिश्र एक सहृदय कवि थे, उन्हें अनेक राज दरवारों में सम्मान प्राप्त था तथा वहाँ उन्होंने अपनी काव्य-प्रतिभा का परिचय दिया था जिसके फलस्वरूप उन्हें "कुलगुरु" की उपाधि प्राप्त हुई थी । सूरति जी ने केवल राजदरवारों में ही

१–देखिए––भक्तिविनोद, कृष्णचरित्र तथा रामचरित्र ।

अपनी काव्य-कला का परिचय नहीं दिया था वरन् 'जन कवि-सम्मेलनों' में भी उन्हें सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ था। इस संबंध में संवत् १७६४ वि० के पूर्व आयोजित आगरे का कवि-समाज स्मरण किया जा सकता है।[१] विक्रम की १८-१९वीं शती हिन्दी-साहित्य में चमत्कारवादी काव्य के लिए प्रमुख रही है। इस समय स्वच्छन्द काव्य के साथ-साथ प्रतिवद्ध समस्यापूर्ति काव्य का भी उत्कर्ष था। कवि जन कवि-गोष्ठियों एवं कवि-सम्मेलनों में अपनी पूर्तियों द्वारा चमत्कार उत्पन्न करके अपनी प्रतिभा का सिक्का स्थापित कर देते थे। सूरति जी ने भी इस प्रकार के काव्य में अपनी प्रतिभा की 'आज़माइश' की थी। 'भक्ति विनोद' के अनेक छंद इसके प्रमाण में दिये जा सकते हैं।[२] 'भक्ति विनोद' कविवर सूरति मिश्र की एक स्वच्छन्द काव्य कृति है जिसमें सूरति जी की उन्मुक्त काव्य-प्रतिभा का पूर्ण प्रकर्ष हुआ है। सूरति जी का काव्य विविध भावों का समाहार ही नहीं,

१—एक समय मधि आगरे कवि समाज को जोग।
मिल्यौ आइ सुख दाइ हिय, जिनकी कविता जोग।।
——माधुरी, जनवरी १९२६ ई० में रत्नाकर जी का लेख तथा हिन्दी साहित्य का अतीत भाग २, पृष्ठ संख्या ४५१-५२

२—भक्ति विनोद——छंद संख्या ३०-३१ की अंतिम पंक्तियाँ हैं——
'और हिये निहचै यह राखो सुधारिहै काज सुधारन हारौ।'
'काहे को सोच करे मन मूढ़ सुधारिहैं काज सुधारन हारौ।'
छंद संख्या ३९-४०-४१ की अंतिम पंक्तियाँ हैं——
'सूरत नेकु लही न परे यह गोविंद की गति गोविंद जानें'
तथा छंद संख्या ४२ की अंतिम पंक्ति है——
'कवि सूरत जे गुन आकर हैं हम चाकर हैं नंद नंदन के'
छंद संख्या ४३ इस प्रकार है——
जिनके शिर मोर किरीट लसे अरु चित्र किये तन चंदन के।
जिनकी वह सांबरी सूरति पे रंग वारियें वारिद मंदन के।
अति नैन विशाल गरें बनमाल औ भाल में बिन्दु है वंदन के।
जोई गोकुल गाँव के ठाकुर है हम चाकर वा नंद नंदन के। ४३।।

अपितु चमत्कार की उत्कृष्टता से भी परिपूर्ण है। सम्भवतः सूरति जी के समय तक कवि एवं आचार्य की कोटियाँ निर्धारित नहीं की गयी थीं। ये कोटियाँ तो परवर्ती काल की उपज हैं। एक कवि, आचार्य एवं कवि दोनों हो सकता है। यह कैसे उपयुक्त माना जा सकता है कि जिसने लक्षण-उदाहरण युक्त ग्रंथ की रचना कर दी वह आचार्य हो गया और कवि की श्रेणी से सर्वथा वहिष्कृत ! सूरति जी अपने समय में कवि रूप में ही प्रख्यात रहे यद्यपि उन्होंने अनेक लक्षण ग्रंथों की रचना की थी। उनके समय में ही उनकी ख्याति चतुर्दिक पहुँच गयी थी। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में उनके ग्रंथों की पाण्डुलिपियों का प्राप्त होना उनकी व्यापक प्रतिष्ठा का ही प्रमाण है। उनके समकालीन ग्रंथों में उनके छंदों का उद्धरण रूप में प्रयुक्त होना भी उनके महत्व का प्रतीक है।[१]

सूरति मिश्र की नव नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा का परिस्फुरण काव्य-रचना में तो हुआ ही था, काव्य के मानदण्ड-निर्धारण में भी उसका सम्यक् उपयोग उन्होंने किया था। काव्य के विभिन्न अंगों के शास्त्र-निर्माण में उनके आचार्यत्व की झलक देखी जा सकती है। सूरति जी ने रस, छंद, अलंकार आदि विषयों पर पृथक्-पृथक् ग्रंथों की रचना की थी। कवि-सिद्धान्त, काव्य-सिद्धान्त, शृंगार सार, सरस रस तथा रसरत्न आदि ग्रंथों में काव्य के लक्षण, काव्य-कारण, काव्य-प्रयोजन, शब्द-शक्ति, काव्य के गुण-दोष, ध्वनि, रस तथा

१–संवत् १७९८ वि० की कृति 'अलंकार रत्नाकर', लेखक 'दलपतिराम बंसीधर' में सूरति मिश्र का यह छंद गम्योत्प्रेक्षा के उदाहरण स्वरूप उद्धृत किया गया है—

भूपति हैं प्रेम लाल डोरे हैं निसान तेई चंचलता चतुर तुरंग भीर भारी हैं।
देषिबों अनेक भाँति तेई अशवार रेष काजर की सोई कारी कोर सी सवारी हैं।
वरंनी बंदूकन की पांति सी लई हैं पिय विरहे गनिम टारिबे की पैंज धारी हैं।
सूरत सुकैवि सेत स्यांम रंग बागे बने प्यारे तेरे नैंननि मैं नीकी अशवारी हैं।।–४७

नायिका भेद संबंधी विवेचना हुई है। 'अलंकार माला' ग्रंथ में अलंकारों के भेदोपभेद एवं लक्षणों का निरूपण हुआ है। 'छंदसार' तथा 'कामधेनु' जैसे ग्रंथों में सूरति मिश्र ने छंद-प्रयोग एवं छंद-निर्माण की चर्चा की है।

यहाँ यह बात विशेष रूप से ध्यातव्य है कि हिन्दी-काव्य के लिए संस्कृत-काव्य-शास्त्र की विपुल ग्रंथ-राशि पहले से ही उपलब्ध थी तथापि हिन्दी के काव्याचार्यों ने हिन्दी में काव्य के विभिन्न पक्ष रस, रीति, गुण, अलंकार तथा छंद पर अनेक ग्रंथों की रचना क्यों की ? इसका सहज कारण यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक भाषा के काव्य के लिए उसका अपना शास्त्र भी आवश्यक है, जिसमें उस भाषा-काव्य के स्पंदनों की झंकृति सुनायी पड़े तथा जिसमें उसकी वृत्तियों की पूर्ण विवृत्ति हुई हो। हिन्दी के काव्याचार्य केशव, चिन्तामणि, देव, मतिराम, कुलपति मिश्र तथा श्रीपति आदि ने इस तथ्य को अंगीकार करके हिन्दी में काव्यशास्त्र विषयक विभिन्न ग्रंथों का निर्माण किया था तथा संस्कृत काव्यशास्त्र को जनभाषा में प्रस्तुत करके उसे सर्वसामान्य के लिए सुबोध बना दिया था। इनके काव्य शास्त्रीय ग्रंथों के मूलाधार संस्कृत के काव्य-शास्त्रीय ग्रंथ थे। कहीं-कहीं इन आचार्यों ने अपने मौलिक विचारों की भी अभिव्यक्ति की है। सूरति मिश्र ने भी इस दिशा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया था। उन्होंने काव्य का लक्षण इस प्रकार निरूपित किया है—

बर्नन मन रंजन जहाँ, रीति अलोकिक होइ।
निपुन कर्म कवि कौ जु तिहिं, काव्य कहत सब कोइ।[१]

आचार्य रूप में सूरति मिश्र की उद्भावनाएँ नितांत मौलिक भले ही न हों, किन्तु काव्य-शास्त्र के विविध पक्षों पर ग्रंथ-निर्माण

१—'काव्य-सिद्धान्त', सूरति मिश्र, दोहा संख्या ३, पाटण की प्रति

करना उनकी गहन अध्ययनशीलता, चिंतन एवं मनन का प्रमाण अवश्य है। संस्कृत-काव्यशास्त्र को आत्मसात् करके हिन्दी में उसे प्रस्थापित करना आचार्य सूरति मिश्र जैसे मनीषियों के लिए ही सम्भव था।

सूरति मिश्र का स्थान हिन्दी के प्रथम श्रेणी के टीकाकारों में है। उन्होंने 'विहारी सतसई' जैसे प्रमुख काव्य-ग्रंथ की टीका 'अमर चन्द्रिका' नाम से की थी तथा केशव के काव्य का मर्म 'कविप्रिया' तथा 'रसिकप्रिया' की टीकाएँ प्रस्तुत करके उद्घाटित किया था। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने 'रसरत्न' आदि ग्रंथों का अर्थ सरल ब्रजभाषा गद्य में प्रस्तुत किया था। सूरति जी एक कुशल अनुवादक भी थे। उन्होंने संस्कृत 'बैताल पंचविंशतिका' तथा 'प्रबोध चन्द्रोदय नाटक' का ब्रजभाषा में अनुवाद किया था। इस प्रकार हम देखते हैं कि सूरति मिश्र को रीतिकालीन काव्य-धारा के एक अत्यन्त प्रातिभ कवि का व्यक्तित्व मिला था जिनके कर्तृत्व की छटा विविध रूपों में विकसित हुई थी।

सूरति मिश्र भक्त कवि भी थे। उन्हें भक्ति-काव्य की प्रेरणा अपने गुरु 'गंगेश' से मिली थी। इसे स्वीकारते हुए उन्होंने लिखा है—

'माथे पर राजति सदा, श्रीमद्गुरु गंगेस।
भक्ति काव्य की रति लही, लहि जिनके उपदेस॥'[1]

सूरति जी वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित थे ऐसा उनके 'श्रीनाथ विलास' तथा 'भक्तमाला' आदि ग्रंथों के निर्माण से प्रतीत होता है। वल्लभ-सम्प्रदाय के भक्तों का यशोगान उनके 'भक्तमाला' ग्रंथ में हुआ है। इसका उल्लेख उन्होंने स्वयं किया है—

१—शृंगार-सार, सप्तम विलास—सूरति मिश्र

'बहुरि भक्तमाला कही, भक्तिन के जस नाम
श्री वल्लभ आचार्य के, सेवक के गुनधाम ।।[१]

उनका भक्त होना तथा वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होना विभिन्न ग्रंथों की निम्नांकित पंक्तियों से भी उद्भासित होता है——

अलंकार माला जु यह, पढ़ैं गुनैं चित लाइ
बुध सभाव प्रवीनता, ताहि देहि हरिराइ ।।[२]
सूरति सुकवि सुन्यौ यहै, फुरै जु कविता रीति
तौ प्रभु जस ही बरनियौ जो हिय सब सुष प्रीति ।।[३]
यह विध सूरत सुकवि यह वरन्यौ भक्ति विनोद
पढ़त गुनत जिहिं चित बढ़ैं कृष्ण भक्ति जुत मोद ।।[४]
कमलनयन कमलद वरन कमल नाभि कमलाय
तिनके चरन कमल रहौं, मो मन जुत गुन जाय ।।[५]
श्री वृन्दावन मधि लसैं नित वय नवल किसौर
गौर स्यांम अभिरांम तन दंपति संपति मौर ।।[६]
घन बपु तडि पटु कमल दृग सीस चंद्रिका मोर
लाल लाल बनमाल उर जय जय नंद किसोर ।।[७]

उपर्युक्त पंक्तियों के अतिरिक्त सूरति मिश्र ने 'कृष्ण चरित' की रचना द्वारा भी अपनी भक्ति-भावना की अभिव्यक्ति की है । वे साम्प्रदायिक सहिष्णुता के पक्षपाती थे तथा सभी देवी-देवताओं के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी । इस मार्ग में गोस्वामी तुलसीदास उनके

१—श्रृंगार सार, सप्तम विलास—सूरति मिश्र
२—अलंकार-माला, अंतिम अंश, दोहा-६६, सूरति मिश्र, पाटण की प्रति ।
३—काव्य-सिद्धान्त, अंतिम अंश, सूरति मिश्र, पाटण की प्रति ।
४—'भक्ति-विनोद'—अंतिम दोहा, संख्या-३२४ राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज, प्रथम भाग, पृष्ठ ९३ ।
५—'रसरत्न' दोहा संख्या १, पाटण तथा ला० द० भारतीय विद्याभवन अहमदाबाद वाली प्रतियाँ ।
६—'काव्य-सिद्धान्त' प्रारंभ-दोहा १, ला० द० भा० विद्याभवन, अहमदाबाद वाली प्रति ।
७—'कामधेनु' प्रारंभ दोहा १ ।

आदर्श थे। सूरति जी ने 'रामचरित' की रचना करके राम का गुणगान किया है तथा भक्ति-विनोद में शिव, गौरी, गणेश, गंगा तथा सविता की अभ्यर्थना की है। वे कृष्ण, राम तथा शिव में कोई अंतर नहीं मानते थे तथा उन्होंने अपने 'तारकों' में 'गंगापति' को भी सम्मिलित किया था।

तारक पाँच गकार हैं सेव सदा श्रुति भेव
गोविंद गीता गायत्री गंगापति गुरुदेव ॥[१]

सूरति मिश्र के संबंध में अन्तर्साक्ष्य एवं वहिर्साक्ष्य दोनों की अत्यल्प सामग्री उपलब्ध होती है। अन्तर्साक्ष्य के रूप में हम कवि द्वारा किये गये उन उल्लेखों को ले सकते हैं जिनमें उन्होंने अपने जन्मस्थान तथा जाति का परिचय दिया है तथा वहिर्साक्ष्य के रूप में हम हिन्दी-साहित्य के उन ग्रंथों को ले सकते हैं जिनमें सूरति मिश्र के व्यक्तित्व अथवा कृतित्व का उल्लेख हुआ है। यहाँ हम दोनों प्रकार की सामग्री का क्रमशः विवरण देते हैं—

अन्तर्साक्ष्य—सूरति मिश्र ने वैसे तो अपने कई ग्रंथों में अपनी जाति, जन्मस्थान तथा ग्रंथ-रचना-काल का उल्लेख किया है किन्तु 'शृंगार सार' ग्रंथ में उन्होंने अपने पिता तथा गुरु का भी उल्लेख किया है साथ ही अपने परिवार की सुरुचियों एवं सद्प्रवृत्तियों का भी संकेत कर दिया है—

नगर आगरौ बसत सौ, बाँकी व्रज की छाँह।
कालिंदी कलमष हरनि, सदा बहति जा माँह।
श्रुति पुरान कविता सरस, जप तप नृत्य सुगान।
जहाँ चरचा निशिदिन यहै, अरचा श्री भगवान ॥
भगवत पारायन भये, तहाँ सकल सुखधाम।
विप्र कन्नवजु कुल कलस, मिश्र सिंध मनि नाम ॥

१—'भक्ति-विनोद', छंद संख्या ४९, म०स० विश्वविद्यालय की प्रति।

तिनके सुत सूरत सुकवि, कीने ग्रंथ अनेक ।
परमारम्य वर्णन विषैं, परी अधकसी टेक ।।
माथे पर राजति सदा, श्रीमद् गुरु गंनेस (गंगेश)
भक्ति काव्य की रति लही, लहि जिनके उपदेस ।।[१]

सूरति जी ने इसी ग्रंथ में अपने ग्यारह ग्रंथों का भी नामोल्लेख किया है—श्रीनाथ विलास, कृष्ण-चरित्र, भक्त विनोद, भक्तमाला, कामधेनु, नषसिष, छंदसार, कवि सिद्धान्त, अलंकार माला, रसरत्न तथा सार सिंगार (शृंगार सार)

बहिर्साक्ष्य

शिवसिंह सरोज :—"६८ सूरत मिश्र आगरे वाले, सं० १७६६ में उ० । ये महान कबीश्वर ने वहुत ग्रंथ वनाए हैं । सतशई का टीका बहुत ही विचित्र वनाया है औ सरस रस १ नख शिख २ रसिकप्रिया का तिलक ३ अलंकार माला ४ ये चारि ग्रंथ भी इन्होंने वहुत सुन्दर वनाए हैं ।"[२]

प्रस्तुत विवरण से केवल यह ज्ञात होता है कि सूरति मिश्र संवत् १७६६ में उपस्थित थे और उन्होंने उपर्युक्त ग्रंथों की रचना की थी । शिवसिंह जी ने सूरति मिश्र के 'दानलीला' ग्रंथ से एक छंद तथा 'अलंकार माला' से तीन दोहे उद्धृत किये हैं । दानलीला वाला छंद सूरति मिश्र की 'भक्ति विनोद' रचना में भी मिलता है ।[३]

हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास :—"सूरति मिसर आगरा के १७२० ई० में उपस्थित । विहारी लाल की सतसई की एक प्रख्यात

१–शृंगार सार—सप्तम विलास, हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथों का पंद्रहवां त्रैवार्षिक विवरण, सन् १९३२-३४ ई०, सम्पादक—पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, पृष्ठ ३३८ ।

२–शिवसिंह सरोज—पृष्ठ ५०९, तीसरी बार सन् १८८३ ई० नवल किशोर प्रेस, लखनऊ ।

३–देखिए—भक्ति विनोद, सूरति मिश्र, छंद संख्या ९२, म० स० विश्व विद्यालय बड़ौदा वाली प्रति ।

टीका, सरस रस, नखशिख, रसिकप्रिया की टीका और अलंकार माला. नामक अलंकार-ग्रंथ के रचयिता। मुहम्मद शाह के शासन काल में वैताल पचीसी का व्रजभाषा में, जैसिंह सवाई की आज्ञा से, अनुवाद किया"।[1]

मिश्र बंधु विनोद :—"५५५ सूरति मिश्र—अनुमान से कहा जा सकता है कि सूरति जी सं० १७४० के लगभग उत्पन्न हुए होंगे।"

"ये महाशय अच्छे कवि थे और भाषा इनकी मधुर थी। सतसई व कविप्रिया के तिलकों से इनके पांडित्य का पूर्ण परिचय मिलता है। ऐसे उत्तम तिलक वहुत ही थोड़े विद्वान् कर सके हैं। सतसई पर कम से कम पैंतीस चालीस तिलक हुए हैं, परन्तु सूरति जी के तिलक की समानता एक भी नहीं कर सकता। इन्होंने अपने तिलक में शंकाएँ करके उनका समाधान वड़ी उत्तमता से कर दिया है। इनकी कवित्व शक्ति तथा पाण्डित्य प्रशंसनीय है।"[2]

हिन्दी साहित्य का इतिहास :—"इन्होंने 'विहारी-सतसई' 'कवि-प्रिया' और 'रसिक-प्रिया' पर विस्तृत टीकाएँ रची हैं जिनसे इनके साहित्य-ज्ञान और मार्मिकता का अच्छा परिचय मिलता है। टीकाएँ व्रजभाषा गद्य में हैं। इन टीकाओं के अतिरिक्त इन्होंने 'बैताल पंच विंशतिका' का व्रजभाषा गद्य में अनुवाद किया है और निम्न-लिखित रीतिग्रंथ रचे हैं—१–अलंकार माला, २–रसरत्न माला, ३–सरस रस, ४–रस ग्राहक-चन्द्रिका, ५–नखशिख, ६–काव्य-सिद्धान्त, ७–रसरत्नाकर।"

"इनके ग्रंथ सव मिले नहीं हैं जितने मिले हैं, उनसे ये अच्छे साहित्य-मर्मज्ञ और कवि जान पड़ते हैं। इनकी कविता में तो कोई

१–हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास—डॉ० सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, अनु०—डॉ० किशोरी लाल गुप्त, पृष्ठ १९८।

२–'मिश्रवन्धु-विनोद' भाग २, मिश्र बंधु, पृष्ठ ५५३।

विशेषता नहीं जान पड़ती पर साहित्य का उपकार इन्होंने वहुत कुछ किया है ।"[१]

आचार्य शुक्ल ने अलंकार माला से कुछ पंक्तियाँ तथा 'नखशिख' से एक छंद उद्धृत किया है । साथ ही सूरति जी का कविता-काल 'विक्रम की अठारहवीं शताब्दी का अंतिम चरण' माना है ।

हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास :—"सूरति के अन्य ग्रंथ रस के संबंध के हैं पर 'काव्य-सिद्धान्त' में काव्य शास्त्र के सभी विषयों पर विचार है और यह एक महत्त्व का ग्रंथ है ।"

"काव्य सिद्धान्त के अंत में छन्दों का वर्णन है जिसमें अनेक विभिन्न प्रकार के मात्रिक एवं वर्णिक छन्दों का पूर्ण रीति से विवेचन है । इस प्रकार काव्य शास्त्र के सभी अंगों पर प्रकाश डालने के कारण सूरति की गणना हिन्दी काव्य शास्त्र के प्रधान आचार्यों में होती है ।"[२]

हिन्दी साहित्य का अतीत :—आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने सूरति मिश्र के संबंध में पूर्वोक्त सभी विद्वानों से अधिक महत्त्वपूर्ण जानकारी अपने ग्रंथ में दी है । सूरति मिश्र के 'रसरत्न' तथा 'सरस रस' ग्रंथों के संबंध में व्याप्त भ्रांत धारणाओं का भी उन्होंने निराकरण किया है । इसके अतिरिक्त सूरति मिश्र का किन-किन राज्य दरवारों तथा आश्रयदाताओं से संबंध रहा—उसका भी सोदाहरण विवेचन किया है । उन्होंने सूरति मिश्र का परिचय मुख्यतः श्रृंगार-सार ग्रंथ के आधार पर दिया है ।[३]

सरोज-सर्वेक्षण :—डॉ० गुप्त जी ने अपने ग्रंथ में सूरति मिश्र जी के संबंध में विद्वानों द्वारा अभिव्यक्त अनेक भ्रांत धारणाओं का

१–'हिन्दी साहित्य का इतिहास', आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ २७० ।
२–'हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास', डॉ० भगीरथ मिश्र, पृष्ठ १०७-१०८ ।
३–'हिन्दी साहित्य का अतीत भाग–२ आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र पृष्ठ ४४५ से ४५४ ।

निराकरण किया है साथ ही खोज-रिपोर्टों में अद्यावधि प्रकाशित सामग्री के आधार पर सूरति जी के अनेक अप्राप्य ग्रंथों की सूचनाएँ एवं विवरण दिये हैं जो निश्चय ही सूरति मिश्र के अध्येताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं। सूरति मिश्र किन-किन राज दरबारों में गये तथा उनका रचनाकाल क्या है––इस संबंध में 'सर्वेक्षण' की पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं––"यह जोधपुर के दीवान अमर सिंह, नंसरुल्ला खाँ, बीकानेर नरेश जोरावर सिंह और दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के आश्रित थे। जयपुर वाले राय शिवदास और हास्यरस की प्रसिद्ध कृति 'खटमल बाईसी' के रचयिता अली मुहिब्ब खाँ 'प्रीतम' के यह काव्य-गुरु थे। इनका रचना-काल संवत् १७६६-१८०० है।"[1]

'सर्वेक्षण' में सूरति जी के पंद्रह ग्रंथों की सूची दी गयी है। (१) अमर चन्द्रिका, (२) कवि प्रिया सटीक, (३) रसिक प्रिया की टीका––यह दो नामों से उपलब्ध है (अ) रस गाहक चन्द्रिका, (ब) जोरावर प्रकाश, (४) अलंकार माला, (५) काव्यसिद्धान्त, (६) छंदसार, (७) नखशिख राधा जू को, (८) प्रबोध चन्द्रोदय नाटक, (९) भक्त विनोद, (१०) रस रत्नमाला, (११) सरस रस अथवा रस सरस, (१२) शृंगार सार, (१३) बैताल पचीसी, (१४) रास लीला, (१५) दानलीला।

डॉ० किशोरी लाल गुप्त लिखते हैं "इनके पाँच और भी ग्रंथों का नाम ज्ञात है जो अभी तक अनुपलब्ध हैं। इनमें ४ की सूची शृंगार सार के विवरण के अन्त में दी गयी है––(श्री नाथ विलास, कृष्ण चरित्र, भक्तमाला और कामधेनु) पाँचवाँ ग्रंथ रामचरित्र है जिसका उल्लेख विनोद में याज्ञिक त्रय की सूचना के आधार पर हुआ है।"[2]

१–'सरोज सर्वेक्षण'––डॉ० किशोरीलाल गुप्त पृष्ठ ७७७।
२–वही • –– पृष्ठ ७८३।

उपर्युक्त विवेचन से संक्षेप में यह तथ्य प्राप्त होते हैं कि सूरति मिश्र कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और आगरा में उनका जन्म हुआ था। इनके पिता सिंहमणि मिश्र परम भागवत थे जिनके परिवार में भक्ति-भाव-विषयक चर्चाएँ होती रहती थीं। सूरति जी के गुरु गंगेश जी थे जिनकी प्रेरणा से इन्होंने भक्ति-काव्य की रचना की थी। इनका प्रादुर्भाव संवत् १७४० वि० के आसपास हुआ था। इनका रचना-काल संवत् १७६६ से १८०० विक्रमी तक था और इन्होंने २० ग्रंथों की रचना की थी। सूरति मिश्र को अनेक राज दरवारों में सम्मान प्राप्त हुआ था।

'सरोज-सर्वेक्षण, ग्रंथ में 'कवि-सिद्धान्त' जिसका उल्लेख 'श्रृंगार-सार' (रचना-काल-संवत् १७८५ वि०) में हुआ है तथा 'काव्य-सिद्धान्त' जिसकी रचना कार्तिक सुदी सप्तमी बुधवार संवत् १७९८ विक्रमी[1] को हुई थी तथा जो 'जालालुद्दीन प्रकाश' नाम से भी प्रसिद्ध है--दोनों को एक ही माना गया है किन्तु यदि ये दोनों ग्रंथ एक होते तो इनका रचना-काल भी एक ही होता लेकिन दोनों का रचना-काल भिन्न है। 'कवि-सिद्धान्त' संवत् १७८५ वि० की अथवा इसके पूर्व की रचना है जबकि 'काव्य-सिद्धान्त' संवत् १७९८ वि० की रचना है अतः दोनों रचनाओं को एक मानना उचित प्रतीत नहीं होता।

सरोज-सर्वेक्षणकार ने काव्य सिद्धान्त में १५० छन्दों का उल्लेख किया है किन्तु प्रस्तुत लेखक ने काव्य सिद्धान्त की जो प्रतियाँ देखी हैं उनमें छन्दों की संख्या १५० नहीं है। पाटणवाली प्रति जिसको कि लेखक ने अपने अध्ययन का आधार वनाया है, उसमें केवल १२५

१–'जालालुदीन प्रकास कौ ।। सुभ सप्तमी अवतारु ।। सत्रह सैं अठानवै ।। कातिग सुदि बुधवारु ।।'
'काव्य-सिद्धान्त' सूरति मिश्र, श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञान मन्दिर, पाटण की प्रति।

छंद हैं यह प्रति सटीक है । टीकाकार का नाम नहीं दिया गया है । स्यात् सूरति मिश्र ने टीका भी की हो । यह प्रति लालभाई दलपति भाई भारतीय विद्या भवन अहमदावाद वाली प्रति से अधिक प्रामाणिक एवं पूर्ण है । इसमें काव्य-लक्षण, काव्य-कारण, काव्य-प्रयोजन, काव्य-स्वरूप, शब्द-निरूपण (लक्षणा व्यंजना का परिचय), काव्य के भेद, काव्य-दोष, गुण, रस-देवता, रस-लक्षण, रस-वर्णन, रीति-वर्णन, रसाभास, भावाभास, भाव-ध्वनि-वर्णन, भाव-संधि तथा भाव-शवलता का वर्णन किया गया है । अलंकारों के विषय में केवल यह निर्देश मिलता है—

अलंकार माला विषै अलंकार लषि लेहु
इहि विधि कविता रचहुं तहँ, कृष्ण गुननि चित देहु ।'[1]

इसके पश्चात 'काव्य-सिद्धान्त' ग्रंथ का रचनाकाल आदि देकर लेखक ग्रंथ समाप्त करता है ।

डॉ० भगीरथ मिश्र जी ने 'काव्य-सिद्धान्त' ग्रंथ के विषय में लिखा है कि इसके अंत में छन्दों का वर्णन है किन्तु उपर्युक्त दोनों प्रतियों में छन्द का कहीं भी उल्लेख नहीं हुआ है । पाटणवाली प्रति संवत् १८१५ वि० की है अर्थात् 'काव्य-सिद्धान्त' ग्रंथ-रचना के १७ वर्ष पश्चात् की । डॉ० मिश्र जी ने जो प्रति टीकमगढ़ राज्य के पुस्तकालय में देखी है उसके आधार पर ग्रंथ का रचनाकाल नहीं दिया है । अनुमान से विक्रम की १८वीं शती का अंतिम चरण लिख दिया है । इससे स्पष्ट है कि उस प्रति में रचना-काल नहीं दिया गया होगा । डा० मिश्र जी ने काव्य-लक्षण का जो दोहा 'काव्य-सिद्धान्त' ग्रंथ से उद्धृत किया है वह दोहा उपर्युक्त दोनों प्रतियों में भी है ।

'कवि-सिद्धान्त' ग्रंथ की रचना तो संवत् १७८५ वि० के पूर्व

१—'काव्य-सिद्धान्त' पाटण की प्रति ।

हुई होगी । सम्भावना इस वात की अधिक है कि कालान्तर में उसमें कुछ परिवर्तन-परिवर्द्धन करके कवि ने उसका नाम 'काव्य-सिद्धान्त' रख दिया हो और किन्हीं जलालुद्दीन नामक आश्रयदाता के नाम पर उसका नाम 'जालालुद्दीन प्रकाश' भी रखा हो । सूरति मिश्र ने 'रसिक प्रिया' की टीका यत्किंचित परिवर्तन के साथ 'रसगाहक चन्द्रिका' तथा 'जोरावर प्रकाश' इन दो नामों से प्रसिद्ध किया था ।

'श्रृंगार-सार' ग्रंथ में 'भक्ति विनोद' तथा 'कृष्ण चरित्र' का उल्लेख हुआ है, किन्तु उसमें 'रामचरित्र' की चर्चा नहीं हुई है । 'भक्ति विनोद' की रचना जन्माष्टमी संवत् १७८५ वि० को हुई थी ।[1] किन्तु 'कृष्णचरित्र' का रचना-काल निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता । इस संबंध में केवल इतना ही हम कह सकते हैं कि 'कृष्ण चरित्र' संवत् १७८५ वि० के पूर्व की कृति है । 'रामचरित्र' जिसकी सूचना याज्ञिक-त्रय ने दी है तथा जो म० स० विश्वविद्यालय के गोविन्द गिल्लाभाई संकलन में उपलब्ध है, उसके रचना-काल के संबंध में भी निश्चयात्मक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता । इतना अवश्य है कि गोविन्द गिल्लाभाई को भरतपुर के राजभंडार में से 'भक्ति विनोद', 'कृष्णचरित्र' तथा 'रामचरित्र' ये तीनों रचनाएँ एक साथ प्राप्त हुई थीं । संभवत: ये तीनों ग्रंथ एक ही गुटका में रहे हों । इसके अतिरिक्त 'रामचरित्र' को 'कृष्णचरित्र' की समकालीन रचना मानने का सवसे सबल प्रमाण रचना-शैली की समानता है ।

'रामचरित्र' तथा 'कृष्णचरित्र' दोनों ग्रंथों में चौपाई और हरि

१—नंद जू तिहारे आजु परम बधाई आई भाई सुख दाई तुम कीनी दाम झरी है ।
सूरति सुकवि जग संवत प्रगट प्रान(५) सिद्धि(८) सुख(७) भू(१) में धन्य धन्य यह घरी है ।
आनंद को रस वरस्यौ हे अति ठौर-ठौर और सुनों तामें अचिरज मति हरी है ।
जहाँ गाँठि तहाँ रस नांहि यह सुनि पर लाल की वरस गाँठि रस ही सों भरी है ।
—भक्ति विनोद, छंद संख्या ११६, म० स० विश्व विद्यालय बड़ौदा वाली प्रति ।

गीतिका छंद का प्रयोग हुआ है। 'रामचरित्र' में २४ छंद हैं तथा 'कृष्णचरित्र' में २२ छंद हैं। 'रामचरित्र' की प्रारम्भिक पंक्तियाँ—

"श्री रामचरित्र सुनौ चित लाई, भवतारन लीला सुखदाई
श्री अवधपुरी जहाँ परम समाजा, राज करै श्री दशरथ राजा"

'श्रीकृष्ण चरित्र' की इन पंक्तियों के सदृश हैं—

"श्रीकृष्ण चरित्र सदा सुखदाई, जिहि गावत सुरनर मुनि राई
श्री मथुरा प्रगटै पूरन कामा, श्री वसुदेव देवकी धामा।"

दोनों ग्रंथों के अंतिम छंद भी द्रष्टव्य हैं—

'रामचरित्र' का अंतिम छंद है—

"सुखदाइ आइ अनंद दीनै पुत्र मित्र समाज को
यो नित अयोध्या में विराजत अवतरे जन काज कों
श्री राम जू के चरित इहि विधि शेष गंगापति रटै।
सूरति सुकवि सो सुनत गावत कोटि कल कलमष कटैं।। २४

'कृष्णचरित्र' का अंतिम छंद है—

लीला करत नित भक्त काजें परम अद्भुत साज सों।
प्रभु नित श्री वृंदावन विराजे जुगल रूप समाज सों।
ये चरित्र शेष दिनेश श्री गंगेश हिय अभिराम है।
सूरत सुकवि श्री भागवत को ध्यान यह सुखधाम है।।

उपर्युक्त छंदों में दोनों ग्रंथों की सदृश रचनापद्धति तथा समान भाव-विन्यास को देखा जा सकता है। इन उद्धरणों के आधार पर यहाँ केवल इतना निवेदित है कि उक्त दोनों ग्रंथों के निर्माण में समय के अधिक अंतराल की सम्भावना नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि सूरति मिश्र ने 'शृंगार-सार' की रचना (१७८५ वि०) के उपरान्त यह अनुभव किया हो कि 'कृष्णचरित्र' तो लिखा ही जा चुका है क्यों न गोस्वामी तुलसीदास की भाँति 'रामचरित्र' भी लिख दिया जाय।

फलस्वरूप संवत् १७८५ वि० के आसपास श्रृंगारसार की रचना के उपरांत ही सूरति मिश्र ने रामचरित्र की रचना की होगी ।

'कवि सिद्धान्त' तथा 'काव्य सिद्धान्त' को पृथक्-पृथक् ग्रंथ मानकर अभी तक सूरति मिश्र के इक्कीस ग्रंथों का उल्लेख मिलता है । डॉ० किशोरी लाल गुप्त पाँच ग्रंथों को अनुपलब्ध बतलाते हैं । जिनका नामोल्लेख पीछे आ चुका है । 'कृष्णचरित्र' तथा 'रामचरित्र' दोनों ग्रंथों की चर्चा ऊपर हो चुकी है, वे दोनों ग्रन्थ म० स० विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग में सुरक्षित हैं । 'कामधेनु' ग्रंथ प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को प्राप्त हो चुका है तथा उसका पाठ आगे दिया जा रहा है । इस प्रकार सूरति मिश्र के केवल तीन ग्रंथ 'श्री नाथ विलास', 'कवि-सिद्धांत' एवं 'भक्तमाला' ही अनुपलब्ध हैं जिनकी चर्चा 'श्रृंगार सार' के अतिरिक्त अन्यत्र देखने में नहीं आयी, किन्तु हो सकता है किसी खोजक को इनमें से कोई ग्रंथ उपलब्ध हो चुका हो ।

अभी तक विद्वानों ने सूरति मिश्र का रचना-काल संवत् १७६६ वि० से १८०० अथवा १८०२ वि० तक माना है और रचना काल को दृष्टि में रखकर मिश्रबंधुओं ने सूरति मिश्र का जन्म संवत् १७४० वि० के आसपास माना है । किन्तु सूरति मिश्र कृत 'कामधेनु' संवत् १७५९ वि० की रचना है और सम्भावना इस बात की भी है कि 'श्रीनाथ विलास' तथा 'भक्तमाला' संवत् १७५९ वि० के पूर्व की रचनाएँ हों । उस समय सूरति जी की आयु तो बहुत ही कम रही होगी । 'कामधेनु' की रचना के समय (संवत् १७४० वि० को जन्म संवत् यदि मानें तो) सूरति मिश्र की आयु केवल १९ वर्ष रही होगी । 'कामधेनु' की रचना के लिए सूरति मिश्र को छंद शास्त्र तथा संगीत शास्त्र का गहन अध्ययन करना पड़ा होगा अतः सूरति मिश्र ने इस ग्रंथ की रचना अपनी प्रारम्भिक अवस्था में न करके प्रौढ़ावस्था में

की होगी। तब तक सूरति मिश्र कुछ सरस ग्रंथों की रचना कर चुके होंगे। अतएव अनुमान यह है कि सूरति मिश्र संवत् १७२० वि० के लगभग उत्पन्न हुए होंगे और उन्हें दीर्घायुष्य प्राप्त हुआ होगा।

सूरति मिश्र की उपर्युक्त चर्चा के उपरान्त अब हम यहाँ 'कामधेनु' ग्रंथ का परिचय देते हैं।'

'कामधेनु' सूरति मिश्र की छंद शास्त्र विषयक रचना है। इसमें उन्होंने एक कवित्त से अनेक छंदों के निर्माण की विधि बतलाकर उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। 'कामधेनु' ग्रंथ की जिस प्रति का उपयोग हमने किया है वह 'श्री आत्माराम जैन ज्ञान मन्दिर, बड़ौदा' से उपलब्ध हुई थी। ज्ञान मन्दिर में इसकी क्रम संख्या प्रवर्त्तक श्री कान्ति विजय जी शास्त्र-संग्रह ४३१ है। यह प्रति पूर्ण तथा प्रायः त्रुटिहीन है। प्रस्तुत प्रति के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रति की आद्यावधि कोई सूचना प्रस्तुत लेखक को नहीं मिली है। प्रतिलिपिकार ने १०.४" × ४.७" के आकार के छः पत्रों में 'कामधेनु' ग्रंथ की प्रतिलिपि की है। पत्रों में मार्जिन छोड़कर ग्रंथ लिखा गया है। इसके लेखन में काली स्याही का प्रयोग हुआ है। लिखावट सुन्दर एवं आकर्षक है। प्रत्येक पृष्ठ में १७ पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग १५ शब्द हैं अथवा ४५ अक्षरों की एक पंक्ति है। प्रतिलिपिकार ने ग्रंथ-लेखन में देसी कागज का उपयोग किया है।

ग्रंथ की पुष्पिका में लिपिकाल नहीं दिया गया है, किन्तु लिखावट एवं कागज को दृष्टि में रखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसका लिपिकाल संवत् १८०० वि० के आसपास होना चाहिए।

'कामधेनु' की प्रस्तुत प्रति वल्लभ नामधारी किन्हीं सज्जन के द्वारा दरभावती नगर (सम्प्रति—डभोई, गुजरात प्रदेश) में लिखी

गयी थी --"इति श्री कामधेनु ग्रंथ सूरतकृत समाप्तं । शुभं भवतु सर्वयोर्ल्लेखक वाचकयो: श्री दरभावती नगरे श्री वल्लभेन ।".

सूरति मिश्र ने 'कामधेनु' ग्रंथ की रचना वैशाख शुक्ल पुष्प सप्तमी गुरुवार संवत् १७५९ वि० में की थी । इसका संकेत कवि ने ग्रंथ के अंत में कर भी दिया है--

"सत्रह सैं उनसठ वरष माधव सुदि गुरुवारु ।
पुष्प सप्तमी कौं भयौ कामधेनु अवतारु ।।"

इस ग्रंथ की भाषा ब्रज है किन्तु लिपिकार की बोली तथा उसके संस्कारों का प्रभाव प्रस्तुति प्रति में बराबर देखा जा सकता है । लिपिकार ने भाषा को अनुनासिकता वहुल वना दिया है । उदाहरणार्थ 'मांनि', 'आंनि', 'सैं', 'लाइयैं', 'कौं', 'वढैं', 'पढें', 'गुनैं', 'कांम' आदि । अनेक शब्दों में अनावश्यक अनुनासिकता पायी जाती है । जैसा कि अन्यत्र कहा जा चुका है कि प्रस्तुत प्रति प्राय: त्रुटिहीन है । यदि लिपिकार से कहीं कोई भूल हो भी गयी है तो वह सरलता से जानी भी जा सकती है और उसका यथासम्भव निराकरण प्रस्तुत लेखक ने कर भी दिया है ।

प्रारम्भ में 'श्री गणेशाय नम:' लिखकर ग्रंथकार ने श्रीकृष्ण की स्तुति की है तथा 'अथ कामधेनु कवित्त को लछन' लिखकर नीचे छ: दोहे दिये हैं जिनमें उसने कामधेनु छंद का वैशिष्ट्य वतलाते हुए उसकी तुलना उस गाय से की है जो हमारे अनेक मनोरथों की पूर्ति करती है । कवि कामधेनु छंद पढ़ने की विधि वतलाते हुए कहता है कि इसमें उस प्राचीन पद्धति का समावेश किया गया है जिसका निर्देश पूर्ववर्ती विद्वानों ने कर भी दिया है अर्थात् कामधेनु छंद को चाहे जहाँ से पढ़ा जाय उससे नवीन छंद का निर्माण अवश्य होगा ।

छठे दोहे में कवि कहता है कि मेरे द्वारा निर्मित छंदों में निम्न-

लिखित दोषों पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए——यथा छंदों में यतिभंग, पुनरुक्ति, व को व, व को व, ज को य, य को ज, र को ल एवं ल को र कहीं-कहीं किया गया है। सूरति मिश्र ने ही नहीं अपितु इनके पूर्ववर्ती कवियों ने भी उक्त दोषों पर ध्यान न देने का वरावर आग्रह किया है। 'साहित्य दर्पण' में इस आग्रह का संकेत करता हुआ एक उल्लेख मिलता है——"यमकादौ भवेदैक्यं डलोर्बवोर्लरौस्तथा" अर्थात् यमक आदि में 'ड', 'ल', 'व', 'व' और 'ल', 'र' के ऐक्य को स्वीकारा गया है।[१] सातवें दोहे में कवि निर्देश देता है कि छंद में जहाँ दीर्घ प्रयोग हुआ हो उसे लघु पढ़ना चाहिए। इससे कवि का आशय यह न समझ लेना चाहिए कि जहाँ कहीं भी दीर्घ हो वहाँ लघु ही पढ़ना चाहिए, अपितु छंद में आवश्यकतानुसार उपर्युक्त निर्देश का पालन होना चाहिए। उपर्युक्त तथ्य-निर्देशक दोहे क्रमशः यहाँ दिये जा रहे हैं :——

देत अनेक मनोरथनि जैसें सुर गो एक
तैसें एक कवित्त तें लहियैं छंद अनेक।२

यामे छंद अनंत हैं सबहि कवित सुभाइ
तातें सूरत कबि अबैं कीयो यहैं उपाइ।३

कामधेनु पोथी रची छंदनि काढि बनाइ
जेसें भेद कवित्त कौ सब पैं समुझ्यो जाइ।४

कही जु पूरब कोविदनि है याकी यह रीति
जहाँ तहाँ तें बांचियैं छंद काज धरि प्रीति।५

सूरत चित्रित छंद मैं इतने दोष म मांनि
जाति भंग पुनरुक्ति पुनि ब व ज य र ल इक बानि।६

दीरघ लघु कै बांचियैं यहो काबि की रीति
काँमधेनु के छंद अब कहौं सुनौं धरि प्रीति।७

१–'साहित्य दर्पण' दशम परिच्छेद, कारिका आठ, पृष्ठ ८८ शालिग्राम शास्त्री।

कविवर सूरति मिश्र ने ३१ वर्ण के घनाक्षरी छंद को सभी छंदों का स्रोत स्वीकार करते हुए लिखा है—'अथ कामधेनु छंद को छंद स्वरूप लिष्यो है कवित्त घनाछरी छंद अछर ३१ में सव भाँति के अनंत निकसत हैं याको स्वरूप लिख्यते ।' उन्होंने ३१ वर्ण का एक कोष्ठक 'कामधेनु' ग्रंथ में दिया है । प्रत्येक कोष्ठ में एक वर्ण लिखा है इस प्रकार ३१ वर्ण ३१ कोष्ठों में अंकित है । कहीं आदि के कुछ वर्णों को लेने से तथा अंत के वर्णों को छोड़ देने से छंद का निर्माण होता है । कहीं-कहीं इसके विपरीत आदि के कुछ वर्णों को छोड़कर अंत के वर्णों को लेने से नवीन छंद वनता है । सूरति जी ने अपने कोष्ठक का रहस्य उद्घाटित करते हुए कहा है—

आदि अंत लौं छाडि गहि बरन अेक के भेद
सूरत दियो बताइ मग लहो छंद निःषेद ।६

'कामधेनु' का प्रत्येक छंद प्रभुनाम-संयुक्त है । सूरति जी की प्रभु-चरणों में अटूट श्रद्धा व प्रीति है । इसीलिए वे ग्रंथ के प्रारम्भिक अंश में ही इस ओर संकेत करते दीखते हैं—

स्याँम भजौ रागें तजौ लहौ छंद की रीति
सूरत सब सुष पाइहैं करि हरि पद सौं प्रीति ।८

'कामधेनु' ग्रंथ में ७१ छंदों का उल्लेख हुआ है, जिनके नाम हैं—

१—शार्दूल	७—मोदक	१३—तोमर
२—द्रुत विलम्बित	८—पद्धडी	१४—दोधक
३—त्रिभंगी	९—चौपई	१५—उपेन्द्रवज्रा
४—गीतक	१०—मालिनी	१६—चंचरी
५—छप्पय	११—ककूभा	१७—भुजंगप्रयात
६—अडिल्ल	१२—इन्द्रवज्रा	१८—मधुभार

१९–समानिका
२०–तोटक
२१–मरहट्टा
२२–निसिपालिका
२३–तुरंगम
२४–कमला
२५–कुंडलिया
२६–शृग्वीनी
२७–हरनी
२८–बिलंता
२९–संजुता
३०–वसंततिलका
३१–मोटक
३२–हरिलीला
३३–चंद्रवर्त्ता
३४–प्रमिता
३५–पादाकुलिक
३६–मल्लिका
३७–पोपाल
३८–आभीर
३९–अमृतगति
४०–मौक्तिकदाम
४१–गंधबेसरी
४२–कुसुमविचित्रा
४३–तरनिजा
४४–कुमारलीला
४५–चामर
४६–सोरठा
४७–वरवै
४८–दोहा
४९–चौबोला
५०–श्री
५१–हरि
५२–रमन
५३–पुंज
५४–वारि
५५–प्रिया
५६–मंथाना
५७–विजोहा
५८–किल्ली
५९–मालती
६०–नगरस्वरूपिणी
६१–धरा
६२–द्रुमिला
६३–गंगोदक
६४–खंजा
६५–रोला
६६–अनुष्टुप्
६७–बंसध्वनि
६८–ससिवदना
६९–चंचला
७०–सुषद
७१–'कामधेनु' छंद-संख्या ३३ का नाम ज्ञात नहीं हो सका।

इन छंदों में से कुछ छंद कई वार उद्धृत हुए हैं जिससे 'कामधेनु' ग्रंथ की कुल छंद संख्या ९४ हो गई है। छंदों के अतिरिक्त सूरति मिश्र ने कामधेनु ग्रंथ में कुछ रागों का भी समावेश किया है जिनके नाम हैं—

१–भैरव
२–रामकली
३–बिलावल
४–आसावरी
५–[illegible]
६–सारंग

७–गौरी	९–मल्हार	११–परज
८–काफी	१०–षट	१२–वसंत

इनमें से कुछ रागों की पुनरावृत्ति भी हुई है जिन्हें मिलाकर पदों की कुल संख्या १५ होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि 'कामधेनु' ग्रंथ में छंद एवं पदों की कुल संख्या १०९ है। १०९वें छंद की समाप्ति पर 'इति कामधेनु के विष्नुपद संपूर्ण' लिखकर कवि ने 'फलस्तुति दोहा' के अन्तर्गत ७ दोहे लिखे हैं जिनमें उसने अपनी सीमित सामर्थ्य, ग्रंथ पढ़ने से फल, अपनी जाति, स्थान तथा ग्रंथ-रचना-संवत् का उल्लेख किया है—

कामधेनु के छंद सब कहि को सकै गनाइ
लहे जथामति कहे ते सूरति सबनि सुनाइ।१
इते छंद कछु मैं कहे अपनी मति बल देषि
और हूँ अपने बुद्धि बल कबि कुल लीजहु लेषि।२
अति रति मति धरि वांचियौ पावन सतनब छंद
रटत हटत अघ ताप त्रय मिटत कटत भवफंद।३
काँमधेनु जो ग्रंथ कौं पढें गुनैं रति लाइ
च्यार पदारथ भजन सुख ताहि देत हरिराइं।४
यह कबि विप्र कनौजिया जांनहु सूरत नाम
नगर आगरें तिनि कियौ कांमधेनु सुषधाम।५
सत्रह सैं उनसठ वरष माधव सुदि गुरुवारु
पुष्प सप्तमी कौं भयौ कामधेनु अवतारु।६
सूरत कृत यह कामधुक सकल कामदा मित्त
ज्यौं ज्यौं पढें बढें भगति राधाबर की चित्त।११६

'कामधेनु' ग्रंथ में सूरति मिश्र ने प्रत्येक छंद के नाम के सामने कुछ निर्देशक संख्याएँ दे दी हैं जिनका घटक बनकर कुल योग ३१ होता है। घटकों का क्रम यह है कि यदि एक घटक को गणना में लिया

है तो दूसरे को छोड़ दिया है ।[1] लिये हुए घटकों की संख्या का योग छंद के वर्णों के योग के बराबर होना चाहिए अन्यथा घटकों में त्रुटि मानी जायेगी । उदाहरणार्थ—मोदक छंद लीजिए, जिसके सामने आ ४४१४८१ लिखा हुआ है ।

धरापति लाइ ररौ मति धारि
रमापति गाइ पलौ मति टारि
रघूपति आंनि भलौ सुविचारि
कृपालय मांनि पलौ न बिसारि ।

अब कवि द्वारा निर्मित कामधेनु कोष्ठक के आधार पर छंद की संख्याओं के घटक बनाने होंगे । कोष्ठक में धरापते ('ते' को 'ति' मान लिया गया है) के पूर्व ४ कोष्ठ हैं जिन्हें छोड़कर ४ कोष्ठ लिये गये हैं जिनसे धरापते शब्द बनता है इस प्रकार ४, ४ के दो घटक बने जिनमें पहले ४ को छोड़कर दूसरे ४ को लिया गया है । 'धरापति' से लेकर 'लाइ' तक १४ कोष्ठ छोड़ने होंगे अर्थात् एक घटक १४ संख्या का बनता है जिसे ग्रहण नहीं करना है । अब 'लाइ ररौ मति धारि' चरणांश शेष रहता है जिसमें ८ वर्ण हैं अर्थात् एक घटक ८ संख्या का बना । 'धारि' के उपरान्त 'यै' बचा रह जाता है और वह छंद में है भी नहीं, अतएव १ संख्या का घटक बना जिसे छोड़ देना है । इस प्रकार उपरिनिर्देशित संख्या के कुल पाँच घटक बनते हैं— ४, ४, १४, ८, १ । इन घटकों का कुल योग ३१ होता है तथा लिये गये घटकों का कुल योग १२ है, मोदक छंद में भी १२ वर्ण होते हैं । अतएव निर्देशित संख्या तथा कोष्ठक के आधार पर मोदक छंद का निर्माण हुआ । यही पद्धति अन्यत्र भी अपनायी गयी है ।

'कामधेनु' ग्रंथ के पाठ-संशोधन में जिन बातों पर विशेष ध्यान दिया गया है, वे इस प्रकार हैं—छंद के सामने मूल संख्या लिखी है,

१—केवल छंद-संख्या ९२ में इस नियम का अपवाद मिलता है ।

कामधेनु कोष्ठक के आधार पर उसका अध्ययन करके घटक वना दिये गये हैं, जो मूल संख्या के नीचे लिख दिये गये हैं। जिन घटकों की गणना करनी है उनके ऊपर √ चिह्न वनाया गया है और जिन्हें छोड़ देना है उनके ऊपर × चिह्न वनाया गया है। मूल संख्या में यदि कहीं त्रुटि पायी गयी है तो संशोधित संख्या [ ] कोष्ठक में दे दी गयी है। जहाँ कहीं कोई वर्ण अथवा शब्द अनुपयुक्त प्रतीत हुआ है। वहाँ [ ] कोष्ठक में उपयुक्त वर्ण अथवा शब्द लिख दिया गया है। कुछ छंदों के नाम पाण्डुलिपि में नहीं हैं, उनके नाम भी [ ] कोष्ठक में दे दिये गये हैं।[1] जहाँ कहीं कोई वर्ण छूट गया है वह भी [ ] कोष्ठक में दे दिया गया है। ह्रस्व-दीर्घ संबंधी भूलों का निर्देश भी पादटिप्पणियों में कर दिया गया है। जहाँ कोई अनावश्यक शब्द आ गया है उसके संबंध में भी पादटिप्पणी में संकेत कर दिया गया है।

सूरति मिश्र ने, विशेषकर मात्रिक-छंदों में, जो संख्याएँ दी हैं, वे छंद की प्रथम पंक्ति की मात्राओं का ही निर्देश करती हैं यदि उनके अनुसार अन्य पंक्तियों का निर्देश प्राप्त करते हैं तो त्रुटि आ जाती है। ऐसी स्थिति में हमें संख्या के अनुसार केवल वर्ण ही नहीं देखने चाहिए, अपितु मात्राएँ भी देख लेनी चाहिए। उदाहरण के लिए सोरठा छंद २२८१

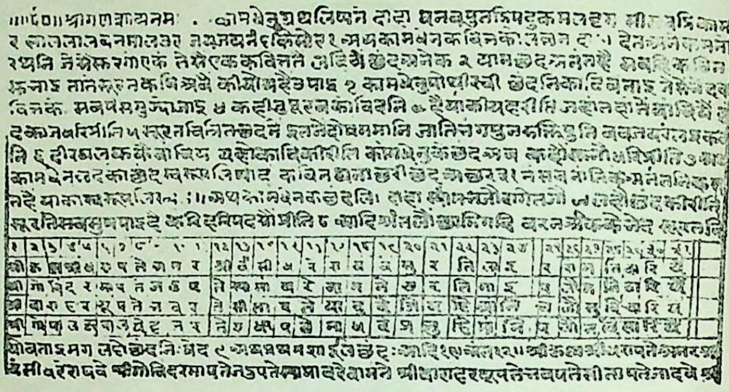
लाइ ररौ मति धारि
गाइ पलौ मति टारियैं
आनि भलौ सुबिचारि
मानि पलौ न बिसारियैं—५७

को लीजिए। सोरठा की विषम पंक्तियों अर्थात् १, ३ में ११ मात्राएँ तथा सम पंक्तियों—२, ४ में १३ मात्राएँ होती हैं। कामधेनु

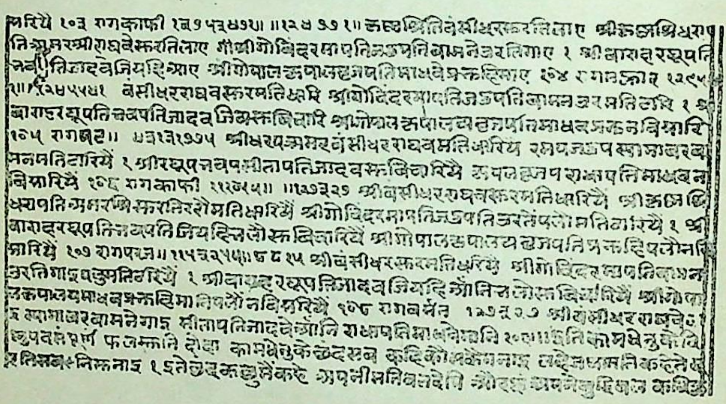
१–केवल छंद संख्या ३३ ही ऐसा है जिसका नाम ज्ञात नहीं हो सका है।

कोष्ठक के आधार पर उपरिनिर्देशित संख्या के २२, ८, १ घटक वनतें हैं । प्रथम तथा तृतीय पंक्ति में ११ मात्राएँ तथा संयोग से ८ वर्ण भी आते हैं किन्तु द्वितीय एवं चतुर्थ पंक्ति में वर्णों की संख्या ६ हो जाती है क्योंकि मात्राएँ भी १३ हैं । अतः ऊपर के घटक यहाँ व्यर्थ हो जाते हैं इसलिए द्वितीय तथा चतुर्थ पंक्ति के लिए २२, ६ का घटक वनेगा । ऐसे अनेक छंदों में इसी पद्धति से घटक वनाने होंगे ।

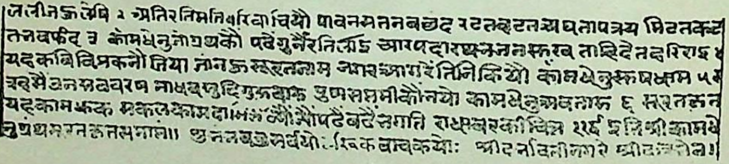
'कामधेनु' ग्रंथ के उपर्युक्त विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सूरति मिश्र को छंद शास्त्र का तलस्पर्शी ज्ञान था और उन्होंने संगीत शास्त्र का भी सम्यक् अध्ययन किया था। कामधेनु कविवर सूरति मिश्र की छांदसिक प्रतिभा का उत्तम निदर्शन है ।



हस्तलिखित प्रति के प्रथम पृष्ठ की छायानुकृति [पृ० २७–२८–२९]



हस्तलिखित प्रति के अंतिम पृष्ठ के पूर्व पृष्ठ की छायानुकृति [पृ० ४९–५०]



हस्तलिखित प्रति के अंतिम पृष्ठ की छायानुकृति [पृ० ५०–५१]

।। अथ कामधेनु ।।

।।९०।। श्री गणेशायनमः अथ कामधेनु ग्रंथ लिष्यते:—

दोहा :—घन वपु तडि पटु कमल दृग सीस चंद्रिका मोर ।।
लाल लाल वनमाल उर जय जय नंद किसोर ।।१।।

अथ कामधेनु कवित्त को लछन—

दोहा :—देत अनेक मनोरथनि जेसैं सुरगो एक ।।
तेसैं एक कवित्त तैं लहियैं छंद अनेक ।।२।।
यामें छंद अनंत हैं सवहि कवित सुभाइ ।।
तातें सूरत कवि अवैं कीयो यहैं उपाइ ।।३।।
कामधेनु पोथी रची छंदनि काढि वनाइ ।।
जेसें भेद कवित्त कौ सव पैं समुझ्यो जाइ ।।४।।
कही जु पूरव कोविदनि है याकी यह रीति ।।
जहां तहां तें वांचियैं छंद कांज धरि प्रीति ।।५।।
सूरत चित्रित छंद मैं इतनें दोष म मांनि ।।
जाति भंग पुनरुक्ति पुनि ववजयरल इक वीनि ।।६।। [वानि]
दीरघ लघु कै वांचियैं यहो कावि की रीति ।।
काँमधेनु के छंद अव कहौं सुनौं धरि प्रीति ।।७।।

अथ कामधेनु छंद को छंद स्वरूप लिष्यो हैं कवित्त घनाछरी छंद अछर ३१ में सब भांति के अनंत निकसत हैं याको स्वरूप लिख्यते ।। अथ कामधेनु के छंद लि। [ख्यते]

दोहा :—स्याँम भजौ रागें तजौ लहौ छंद की रीति ।।
सूरति सब सुष पाइहैं करि हरि पद सौं प्रीति ।।८।।
आदि अंत लौं छाडि गहि वरन अेक के भेद ।।
सूरत दियो वताइ मग लहो छंद नि:षेद ।।९।।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
श्री	कृ	ष्ण	श्री	ध	रा	प	ते	अ	म	र	श्री	वं	सी	ध	रे	रा	घ	वे	सु	र	ति	ला	इ	र	रौ	म	ति	धा	रि	यैं
श्री	गो	विं	द	र	मा	प	ते	ज	दु	प	ते	स्या	मां	ब	रे	वा	म	ने	उ	र	ति	गा	इ	प	लौ	म	ति	टा	रि	यैं
श्री	वा	रा	ह	र	घू	प	ते	भ	व	प	ते	सी	ता	प	ते	या	द	वे	जि	य	हि	आं	नि	भ	लौ	सु	वि	चा	रि	यैं
श्री	गो	पा	ल	कृ	पा	ल	ये	वृ	ज	प	ते	रा	धा	प	ते	मा	ध	वे	प्र	भु	हि	मां	नि	प	लौं	न	वि	सा	रि	यैं

अथ प्रथम शार्दूल छंद : आदि १९ अंत १२
श्री कृष्ण श्री धरापते अमर श्री बंसीधरे राघवे १९ १२
श्री गोविंद रमापते जदुपते स्यामा वरे वामने
श्री वाराह रघूपते भवपते सीतापते जादवे
श्री गोपाल कृपालये वृजपते राधापते माधवे ।१।

अथ द्रुतविलंबित छंद : आदि १९ अंत १२
[सु] सूरति लाइ ररौ मति धारियैं १९ १२
उरति गाइ पलौ मति टारियैं
जियहि आंनि भलौ सुविचारियैं
प्रभुहि मांनि पलौ न विसारियैं ।२।

त्रिभंगी छंद : आ १६३२१४५ अं।।
श्रीकृष्ण श्रीधरापते अमर श्रीबंसीधर सुर लाइ ररौ १६,३,२,१,४,५
श्री गोविंद रमापते जदुपते स्यामा वर उर गाइ परौ
श्री वाराह रघूपते भवपते सीतापति जिय आँनि भलौ
श्री गोपाल कृपालये वृजपते राधापति प्रभु मांनि पलौ ।३।

गीतक छंद : आ १७८३२१९
श्री अमर श्री बंसीधरे सुर लाइ ररौ मति धारियैं १,७,८,३,२,१,९
श्री जदुपते स्यामावरे उर गाइ पलौ मति टारियैं
श्री भवपते सीतापते जिय आंनि भलौ सुविचारियै
श्री वृजपते राधापते प्रभु मांनि पलौ न विसारियैं ।४।

छप्पय छंद आ* १६ आ १९२१८१
श्री कृष्ण श्री धरापते अमर श्री वंसीधर १९,२,१,८,१
श्री गोविंद रमापते जदुपते स्यामांवर
श्री बाराह रघूपते भवपते सीतापति
श्री गोपाल कृपालये वृजपते राधापति

सुर लाइ ररौ मति धारि, उर गाइ पलौ मति टारियैं ।
जिय आंनि भलौ सुविचारि, प्रभुहि माँनि पलौ न विसारियैं ।५।*

अडिल्ल छंद : आ १२४३२१९

× ✓ × ✓ × ✓
१२,४,३,२,१,९

बंसीधर सुर लाइ ररौ मति धारियै
स्यामावर उर गाइ पलौ मति टारियैं
सीतापति जिय आंनि भलौ सुविचारियैं
राधापति प्रभु मांनि पलौ न विसारियै ।६।

मोदक छंद : आ ४४१४८१

× ✓ × ✓ ×
४,४,१४,८,१

धरापति लाइ ररौ मति धारि
रमापति गाइ पलौ मति टारि
रघूपति आंनि भलौ सुविचारि
कृपालय मांनि पलौ न विसारि ।७।

पध्धडी छंद : आ २१३१७

✓ × ✓ ×
[१,१३,१०,७]

श्री धरे राघवे सुरति लाइ
श्री वरे वामने उरति गाइ
श्री पते जादवे जियहि आंनि
श्री पते माधवे प्रभुहि मांनि ।८।

चौपइ छंद : आ ४४३५१५

× ✓ × ✓ ×
४,४,३,५,१५

धरापते श्री बंसीधरे
रमापते ते स्यामांवरे
रघूपते ते सीतापते
कृपालये ते राधापते ।९।

***प्रथम चार पंक्तियों में आदि के १६ वर्ण लेने होंगे फिर अंतिम दो पंक्तियों में वर्ण लेने का क्रम ऊपर निर्दिष्ट कर दिया गया है । इस निर्देशन के अनुसार चिह्नित शब्द 'टारियैं' तथा 'विसारियैं' के स्थान पर 'टारि' तथा 'विसारि' होना चाहिए । एवं 'प्रभुहिं' के स्थान पर केवल 'प्रभु' होना चाहिए ।**

मालिनी छंद : ४३१११११११
× √ × √ × √
धरप. अमर श्री बंसीधरे राघवे ये ४,३,१,११,११,१
रमुप जदुपते स्यामांवरे वामने ये
रघुप जदुपते सीतापते जादवे ये
कृपल बृजपते राधापते माधवे ये ।१०।

ककूभा छंद : ४८४६२७
× √ × √ × √
धरापते अमर श्री राघव सुरति ररौ मति धारियैं ४,८,४,६,२,७
रमापते जदुपते वामने उरति पलौ मति टारियैं
रघूपते भवपते जादवे जियहि भलौ सुविचारियैं
कृपालये वृजपते माधवे प्रभुहि पलौ न विसारियैं ।११।

इन्द्रवज्रा छंद : १३८७१११
× √ × √ × √
कृष्ण श्रि बंसीधर राघवे ये १,३,८,७,११,१
गोविन्द स्यामांवर वामने ये
वाराह सीतापति जादवे ये
गोपाल राधापति माधवे ये ।१२।

तोमर छंद : ८४४३३२७
× √ × √ × √ ×
अमर श्री राघव लाइ ८,४,४,३,३,२,७
जदुपते वामन गाइ
भवपते जादव आंनि
बृजपते माधव मांनि ।१३।

दोधक छंद : १६३३९
× √ × √
राघव लाइ ररौ मति धारिय १६,३,३,९
वामन गाइ पलौ मति टारिय
जादव आँनि भलौ सुविचारिय
माध [व][१] मांनि पलौ न विसारिय ।१४।

१–पाण्डुलिपि में 'व' छूटा हुआ है ।

उपेन्द्रवज्रा छंद : ४३५७१११
धराप बंसीधर राघवे ये × ✓ × ✓ × ✓ ४,३,५,७,११,१
रमाप स्यामांवर वामने ये
रघूप सीतापति जादवे ये
कृपाल राधापति माधवे ये ।१५।

[चंचरी] छंद : १३३५४३२१२१६
श्रीधराप बंसीधरे सुप[र]लाइ लौ मति धारियैं ✓ × ✓ × ✓ × ✓ × ✓ × ✓ १,३,३,५,४,३,२,१,२,१,६
श्री रमाप स्यामांवरे उर गाइ लों मति टारियैं
श्री रघूप सीतापते जिय आंनि लौ सुविचारियैं
श्री कृपाल राधापते प्रभु मांनि लौं न बिसारियैं ।१६।

भुजंग प्रयात छंद : ४८७१११
श्री कृष्ण श्री बंसीधरे राघवे ये ✓ × ✓ × ✓ ४,८,७,११,१
श्री गोविन्द स्यामांवरे वामने ये
श्री बाराह सीतापते जादवे ये
श्री गोपाल राधापते माधवे ये ।१७।

मधुभार छंद : १
कृष्ण श्रि लाइ [× ✓ × ✓ × १,३,१८,२,७]
गोबिन्द गाइ
बाराह आंनि
गोपाल मांनि ।१८।

सामानिका छंद : १३३९३१२
श्री धराप राघवे ✓ × ✓ × ✓ × १,३,३,९,३,१२
श्री रमाप वामने
श्री रघूप जादवे
श्री कृपाल माधवे ।१९।

तोटक छंद : १३४८३३४५

श्री धरापति राघव लाइ ररौ ✓ × ✓ × ✓ × ✓ ×
१,३,४,८,३,३,४,५
श्री रमापति वामन गाइ परौ
श्री रघूपति जादव आँनि भलौ
श्री कृपालय माधव मांनि पलौ ।२०।

मरहट्टा छंद : ७१५२६१

ते अमर श्री बंसीधरे राघवे सुरति ररौ मति धारि × ✓ × ✓ ×
७,१५,२,६,१
ते जदुपति स्यामावर वामने उरति पलौ मति टारि
ते भवपति सीतापते जादवे जियहि भलौ सुविचारि
ये वृजपति राधापते माधवे प्रभुहि पलौ न विसारि ।२१।

निसिपालिका छंद : ७४५३२३२५

ते अमर राघवति लाइ मति धारियैं × ✓ × ✓ × ✓ × ✓
७,४,५,३,२,३,२,५
ते जदुपति[1] वामनति गाइ मति टारियैं
ते भवप जादवहि आंनि सुविचारियैं
ये वृजप माधवहि माँनि न विसारियैं ।२२।

तुरंगम छंद : ४३१४१८१

धरप अमर वे [श्री] ये × ✓ × ✓ × ✓
४,३,१,४,१८,१
रमप जदुपते ये
रघूप भवपते ये
कृपल वृजपते ये ।२३।

कमला छंद : १९३४५

सुरति मति धारियैं × ✓ × ✓
१९,३,४,५
उरति मति टारियैं
जियहि सुबिचारियैं
प्रभुहि न विसारियें ।२४।

१–'ति' नहीं होना चाहिए ।

पद्धडिका छंद : ७४५८७

ते अमर राघवे सुरति लाइ ७,४,५,८,७

ते जदुप वामने उरति गाइ

ते भवप जादवे जियहि आंनि

ते वृजप माधवे प्रभुहि मांनि ।२५।

कुंडलिया छंद : ११११२६१

श्री वंसीधर राघवे सुरति ररौ मति धारि ११,११,२,६,१

ते स्यामावर वामने उरति पलौ मति टारि

उरति पलौ मति टारियेति सीतापति जादव जियहि

भलौ सुविचारियेति राधापति माधव जियहि

भलौ सुविचारि प्रभुहि मानि पलौ न विसर

श्री कृष्ण श्री धरापते अमर श्री बंसीधर ।२६।

शृग्वीनी छंद : १५११११२

श्रीप अमर श्री बंसीधरे राघवे १,५,१,१,११,१२

श्रीप जदुपते स्यामावरे वामने

श्रीप भवपते सीतापते जादवे

श्रीप वृजपते राधापते माधवे ।२७।

हरनी छंद : ११३५३४५

श्रीधर राघव लाइ ररौ १,१३,५,३,४,५

श्रीवर वामन गाइ परौ

श्रीपति जादव आँनि भलौ

श्रीपति माधव माँनि पलौ ।२८।

विलंता छंद : ८४४३३२६१

अमर श्रीधर राघव लाइयैं [८,४,२,५,३,२,६,१]

जदुपते वर वामन गाइयैं

भवपते पति जादव आंनियैं
वृजपते पति माधव माँनियैं ।२९।

संजुता छंद : १९३५३२६१
श्रीधरे राघव लाइयैं १,१३,५,३,२,६,१
श्रीवरे वामन गाइयैं
श्रीपते जादव आँनियै
श्रीपते माधव माँनियैं ।३०।

शृग्वी छंद : १५१५७३२६१
श्रीप बंसीधरे राघवे लाइयैं १,५,१,५,७,३,२,६,१
श्रीप स्यामावरे वामने गाइयैं
श्रीप सीतापते जादवे आनियैं
श्रीज [ल] राधापते माधवे मांनियैं ।३१।

वसंततिलका छंद : १३३५२५१११
कृष्ण श्रि ते अमर श्रीधर राघवे ये १,३,३,५,२,५,११,१
गोविन्द ते जदुपति वर वामने ये
वाराह ते भवपते पति जादवे ये
गोपाल ते बृजपते पति माधवे ये ।३२।

छंद : ११५१०५
ति [श्री] बंसीधरे मति धारियैं ११,५,१०,५
ति स्यामावरे मति टारियै
ति सीतापते सुविचारियै
ति राधापते न विसारियैं ।३३।

मोटक छंद : १२७३४५
बंसीधर राघव लाइ ररौ १२,७,३,४,५
स्यामावर वामन गाइ पलौ

सीतापति जादव आँनि भलौ
राधापति माधव मांनि पलौ ।३४।

हरिलीला छंद : १३८७३२११४
कृष्ण श्रि बंसीधर राघव लाइ लौइ[1]
× ✓ × ✓ × ✓ × ✓ × ✓
[१,३,८,७,३,२,१,१,४,१]
गोविन्द स्यामावर वामन गाय लौय
वाराह सीतापति जादव आंनि लौय
गोपाल राधापति माधव मांनि लौय ।३५।

चंद्रवर्त्ता छंद : ४३५७५२५
धराप बंसीधर राघवे ररौ
× ✓ × ✓ × ✓ ×
४,३,५,७,५,२,५
रमाप स्यामावर वामने परौ
रघूप सीतापति जादवे भलौ
कृपाल राधापति माधवे पलौ ।३६।

प्रमिता छंद : १४१२५
धरि राघवे सुरति लाइ ररौ
× ✓ ×
१४,१२,५
वर वामने उरति गाइ परौ
पति जादवे जियहि आंनि भलौ
पति माधवे प्रभुहि मानि पलौ ।३७।

पादाकुलिक छंद : ८८३२११७१
अमर श्रि बंसीधर सुर लाये
× ✓ × ✓ × ✓ × ✓
८,८,३,२,१,१,७,१
जदुपति स्यामावर उर गाये
भवपति सीतापति जिय आये
वृजपति राधापति प्रभु माये ।३८।

१—यहाँ 'रौ' के स्थान पर 'लौं' हो गया है, क्योंकि 'र' का 'ल' हो जाता है, इस संबंध में कवि ने पहले ही लिखा है—'व व ज य र ल इक बानि'।
'इ' के स्थान पर 'य' होना चाहिए।

पुनः १५२११७४१
श्रीपते सुरति लाइ ररौ ये १,५,२,११,७,४,१
श्रीपते उरति गाइ पलौ ये
श्रीपते जियहि आँनि भलौ ये
श्रीलये प्रभुहि मानि पलौ ये ।३९।

मल्लिका छंद : १३३९३२१९
श्री धराप राघवेति १,३,३,९,३,२,१,९
श्री रमाप वामनेति
श्री रघूप जादवेहि
श्री कृपाल माधवेहि ।४०।

पध्धडी छंद : १३१२३३२११४
कृष्ण श्री राघवे लाइ लौय [१,३,१२,३,३,२,१,१,४,१]
गोविंद वामने गाइ लौय
वाराह जादवे आंनि लोय
गोपाल माधवे मानि लौय ।४१।

पोपाल छंद : १२५८३३२७
श्री य [श्री] धरापति राघव लाइ १,२,५,८,३,३,२,७
श्रीद रमापति वामन गाइ
श्रीह रघूपति जादव आनि
श्रील कृपालय माधव मांनि ।४२।

आभीर छंद : १६८७
राघवे सुरति लाइ १६,८,७
वामने उरति गाइ
जादवे जियहि आंनि
माधवे प्रभुहि मांनि ।४३।

मल्लिका छंद : १३३१५२११४१

श्री धराप लाइ लौय १,३,३,१५,२,१,१,४,१
श्री रमाप गाइ लौय
श्री रघूप आंनि लौय
श्री कृपाल माँनि लौय ।४४।

अमृत गति छंद : ६२८५१२७

पति राघवे सुर लाइ ६,२,८,५,१,२,७
पति वामने उर गाइ
पति जादवे जिय आँनि
पति माधवे प्रभु मांनि ।४५।

दोधक छंद : १२५१०१७५

श्री य [श्री] धरापति वे मति धारिय १,२,५,१०,१,७,५
श्रीद रमापति ने मति टारिय
श्रीह रघूपति वे सुविचारिय
श्रील कृपालय वे न विसारिय ।४६।

मौक्तिकदाम छंद : ४३५७३२७

श्री[1] धराप बंसीधर राघव लाइ ४,३,५,७,३,२,७
रमाप स्यामावर वामन गाइ
रघूप सीतापति जादव आंनि
कृपाल राधापति माधव मांनि ।४७।

चर्चरी छंद : १३३५६५४१

श्री धराप बंसीधरे राघवे सुरमति धारि १,३,३,५,९,५,४,१
श्री रमाप स्यामावरे वामने उरमति टारि
श्री रघूप सीतापते जादवे जिय सुविचारि
श्री कृपाल राधापते माधवे प्रभु न विसारि ।४८।

१–'श्री' नहीं होना चाहिए ।

तोमर छंद : १३३९३३२७

श्री धरप राघव लाइ √ × √ × √ × √ × १, ३, ३, ९, ३, ३, २, ७
श्री रमप वामन गाइ
श्री रघूप जादव आनि
श्री कृपल माधव मांनि ।४९।

गंधबेसरी छंद : ४३१११३४४१

धरप अमर श्री बंसीधर राघवे लाइ ररौ य × √ × √ × √ × √ ४, ३, १, ११, ३, ४, ४, १
रमाप जदुपति स्यामावर वामने गाइ परौ य
रघूप भवपति सीतापति जादवे आनि भलौ य
कृपल वृजपति राधापति माधवे मानि पलौ य ।५०।

कुसुमविचित्रा छंद : ४४४४१०४१

धरपति बंसीधर मति धारि × √ × √ × √ × ४, ४, ४, ४, १०, ४, १
रमपति स्यामावर मति टारि
रघूपति सीतापति सुविचारि
कृपलय राधापति न विसारि ।५१।

तरनिजा छंद : ४८१९

धरपते, अमरते[1] [श्री] × √ × ४, ८, १९
रमपते, जदुपते ।५२।

कुमार लीला छंद : १२४६१७१

बंसीधरति लाये [× √ × √ × √ १२, ४, ५, २, ७, १]
स्यामावरति गाये
सीतापतिहि आये
राधापतिहि माये ।५३।

१–'ते' के रखने के लिए छंद में निर्दिष्ट संख्या के स्याम पर ४ (×), ७ (√), १० (×), १ (√), ९ (×) की संख्या होनी चाहिए।

मधुभार छंद : ७४११२७

ते अमर लाइ ७,४,११,२,७

ते जदुपति[1] गाइ

ते रघूप आनि

ये वृजप मांनि ।५४।

चामर छंद : १३४४३१३२३११५

श्री धरापते बंसीध राघवेति लाइ लौं १,३,४,४,३,१,३,२,३,१,१,५

श्री रमापते स्यामावर[2] वामनेति गाइ लौं

श्री रघूपते सीताप जादवेहि आंनि लौं

श्री कृपालये राधाप माधवेहि मानि लौ ।५५।

चोपइ छंद : १५२८३३४४१

श्रीपति राघव लाइ ररौ ये १,५,२,८,३,३,४,४,१

श्रीपति वामन गाइ पलौ ये

श्रीपति जादव आनि भलौ ये

श्रीलय माधव मांनि पलौ ये ।५६।

सोरठा छंद : २२८१

लाइ ररौ मति धारि २२,८,१

गाइ पलौ मति टारियैं

आनि भलौ सुविचारि

मानि पलौ न बिसारियैं[3] ।५७।

१–'ति' नहीं होना चाहिए ।

२–'र' नहीं होना चाहिए ।

३–उपरिनिर्दिष्ट संख्या सोरठा छंद की विषम पंक्तियों अर्थात् १ और ३ के लिए ही दी गई है । सम पंक्तियों के लिए संख्या २२, ९ होनी चाहिए ।

वरवै छंद : ४४४७३२७

× ✓ × ✓ × ✓ ×
धरापते बंसीधर राघव लाइ ४,४,४,७,३,२,७
रमापते स्यामावर वामन गाइ ।५८।

अन्यच्च ।।क्रमपूर्वक।।
रघूपति सीतापति जादव आंनि
कृपालये राधापति माधव मांनि ।५९।

दोहा छंद : ४४४४३५२४१

× ✓ × ✓ × ✓ × ✓ ×
धरापते बंसीधरे सूरति लाइ मति धारि ४,४,४,४,३,५,२,४,१
रमापते स्यामावरे उरति गाइ मति टारि ।६०।

अन्यच्च—
रघूपते सीतापते जियहि आंनि सुविचारि
कृपालये राधापते प्रभुहि मांनि न विसारि ।६१।

वरवै छंद : ११८१२४४१

× ✓ × ✓ × ✓ ×
श्री बंसीधर राघव रति मति धारि ११,८,१,२,४,४,१
ते स्यामावर वामन रति मति टारि ।६२।

अन्यच्च—
ते सीतापति जादव जिय सुविचारि
ते राधापति माधव प्रभु न विसारि ।६३।

दोहा छंद : ८४४३२१२३

✓ × ✓ × ✓ × ✓ ×
श्री कृष्ण श्री धरापते बंसीधर सुर लाइ [८,४,४,३,२,१,२,७]
श्री गोविन्द रमापते स्यामावर उर गाइ ।६४।
श्री वाराह रघूपते सीतापति जिय आंनि
श्री गोपाल कृपालये राधापति प्रभु मांनि ।६५।

चौबोला छंद : १९२१८१

श्री कृष्ण श्री धरापति अमर सी[श्री]बंसीधर राघवेति ये १९,२,१,८,१
श्री गोविंद रमापति जदुपति स्यामावर वामनेति ये
श्री वाराह रघूपति भवपति सीतापति जादवेहि यें
श्री गोपाल कृपालय वृजपति राधापति माधवेहि यै ।६६।

[भुजंग प्रयात] छंद : ११८३२११४१

श्री बंसीधरे राघवे लाइ लौयें ११,८,३,२,१,१,४,१
ति स्यामावरे वामने गाइ लौयें
ति सीतापते जादवे आनि लौये
ति राधापते माधवे मानि लौयें ।६७। पं० ३

तरनिजा छंद[1] : ४८१९

रघूपते ।भवपते । कृपलये । वृजपते ।६८। ४,८,१९

श्री छंद : ११०१४११११२

श्री ।। श्री ।। रा।। धा।। ६९ । १,१०,१,४,१,११,१,२

[हरि] छंद : १४२३२१०

धर ।। वर ।। सुर ।। उर ।। ७० । १४,२,३,२,१०

रमन छंद : १९२९१

सुरये ।। उरये ।। जियये ।। प्रभुये ।। ७१ । १९,२,९,१

[पुंज] छंद : १९२१२७

सुर लाइ । उर गाइ । जिय आनि । प्रभु मानि । ७२। १९,२,१,२,७

पुनः २६४१

मति धारि । म [ति] टारि । सुविचारि । न विसारि ।७३। २६,४,१

१–पाण्डुलिपि में छंद के समक्ष दी हुई संख्या के ऊपर 'पं० ३' लिखा है, यह इस बात का निर्देश करता है कि छंद तीसरी पंक्ति से प्रारंभ करना चाहिए ।
पाण्डुलिपि में '९' कटा है किन्तु यह होना चाहिए ।

बारि छंद : १५११५२७

श्रीप लाइ । श्रीप गाइ । श्रीप आनि । श्रीप मानि ।७४। १,५,१,१५,२,७

प्रिया छंद : २६५

मति धारियै । मति टारियैं । २६,५

सुविचारियैं । न बिसारियैं । ७५ ।

मंथाना छंद : १२४६२७

बंसीधरे लाइ । स्यामावरे गाइ । १२,४,६,२,७

सीतापते आनि । राधापते मांनि ।७६।

विजोहा छंद : १५१५४१५

श्रीप बंसीधरे । श्रीप स्यामावरे । १,५,१,५,४,१५

श्रीप सीतापते । श्रील राधापते ।७७।

किल्ली छंद : २०६५

रति लाइ ररौ । रति गाइ परौ । २०,६,५

जिय आँनि भलौ । प्रभु मानि पलौ ।७८।

मालती छंद : २४६१

ररौ मति धारि । पलौ मति टारि । २४,६,१

भलौ सुविचारि । पलौ न विसारि ।७९।

कुमार लीला छंद : ४४१६२४१

धरापति ररौ ये । रमापति पलौ यै । ४,४,१६,२,४,१

रघूपति भलौ ये । कृपालय पलौ यै ।८०।

नगर स्वरूपिणी छंद[1] : ४४ २७४ [४,४,२३]

धरापते रमापते रघूपते कृपालयैं [२७,४]

तिधारियै ति टारियैं विचारियै बिसारियै ।८१।

१—छंद की प्रथम पंक्ति में ४, ४, २३ का क्रम है और दूसरी पंक्ति में २७, ४ का क्रम है ।

११५३ [१,१५,३,१२]

[धरा] छंद[1] : २१३१.१५

श्री राघवे श्री वामने श्री जादवे श्री माधवे २१,३,१,१,५
ति लाइ लौ ति गाइ लौ हि आनि लौ हि मानि लौ ।८२।

तोमर छंद : १९२१२१५१

सुर लाइ लौ मति धारि १९,२,१,२,१,५,१
उर गाइ लौ मति टारि
जिय आनि लौ सुविचारि
प्रभु मानि लौ न विसारि ।८३।

द्रुमिला छंद : १२५४९१९

१,२,५,४,९,१,९

श्रीय [श्री] धरापति बंसीधरे राघवे रति [सुर] लाइ ररौ मति धारियैं
श्रीद रमापति स्यामावरे वामने उर गाइ पलौ मति टारियैं
श्रीह रघूपति सीतापते जादवे जिय आनि भलौ सुविचारियै
श्रील कृपालय राधापते माधवे प्रभु मानि पलौ न विसारियै ।८४।

गंगोदक तथा खंजा छंद : १३२७

१,३,२७

श्री धरापते अमर श्री बंसीधरे राघवे सुरति लाइ ररौ मति धारियैं
श्री रमापते जदुपते स्यामावरे वामने उरति गाइ पलौ मति टारियैं
श्री रघूपते भवपते सीतापते जादवे जियहि आनि भलौ सुविचारियैं
श्री कृपालये बृजपते राधापते माधवे प्रंभुहि मानि पलौ न विसारियैं ।८५।

रोला छंद : १२१८१

बंसीधर राघवे सुरति लाइ ररौ मति धारि १२,१८,१
स्यामावर वामने उरति गाइ पलौ मति टारि

१–'ति' तथा 'हि' को दीर्घ मानना चाहिए तभी धरा छंद बन सकता है ।

सीतापति जादवे जियहि आंनि भलौ सुविचारि
राधापति माधवे प्रभुहि मानि पलौ न विसारियैं[1] ।८६।

१३१२३३२७/
अनुष्टुप छंद[2] : १३२२५ पं० ३
कृष्ण श्रि राघवे लाइ । वाराह सुविचारियैं १,३,१२,३,३,२,७/१,३,२२,५
गोविंद वामने गाइ । गोपाल न विसारियैं ।८७।

सोरठा छंद : ७२४
श्री कृष्ण श्रि धराप श्री गोपाल कृपालये ७,२४
श्री गोविंद रमाप श्री वाराह रघूपते ।८८।

बंसध्वनि छंद : १३८७५२५
कृष्ण श्रि बंसीधर राघवे ररौ १,३,८,७,५,२,५
गोविंद स्यामावर वामने परौ
वाराह सीतापति जादवे भलौ
गोपाल राधापति माधवे पलौ ।८९।

ससिवदना छंद : ८४४११११
अमर श्रि वे ये । जदुपति ने ये । [८,४,६,१,११,१]
भवपति वे ये । वृजपति वे ये ।९०।

प्रिया छंद : १२४१५
बंसीधरे । स्यामावरे । १२,४,१५
सीतापते । राधापते ।९१।

१–'यैं' नहीं होना चाहिए ।
२–प्रथम तथा तृतीय पंक्ति फिर द्वितीय एवं चतुर्थ पंक्ति एक साथ पढ़नी चाहिए ।

×
चंचला छंद[1] : १३४४५३२३७

✓ × ✓ × ✓ ✓ × ✓ ×
श्री धरापते बंसीधरे श्रि राघवेति लाइ [१,३,४,३,५,३,२,३,७]
श्री रमापते स्यामावरेति वामनेति गाइ
श्री रघूपते सितापतेहि जादवेहि आंनि
श्री कृपालये राधापतेति माधवेहि मांनि ।६२।

तोटक छंद : ६२४४३२१४५

× ✓ × ✓ × ✓ × ✓ ×
पति बंसीधरे सुर लाइ ररौ ६,२,४,४,३,२,१,४,५
पति स्यामावरे उर गाइ परौ
पति सीतापते जिय आंनि भलौ
लय राधापते प्रभु मानि पलौ ।६३।

सुषद छंद : १५११३१७३४५

✓ × ✓ × ✓ × ✓ × ✓ ×
श्रीप अमर बंसीधर राघव लाइ ररु १,५,१,१,३,१,७,३,४,५
श्रीप जदुप स्यामावर वामन गाइ परु
श्रीप भवप सीतापति जादव आनि भलु
श्रील बृजप राधापति माधव मानि पलु ।६४।

इति छंद संपूर्ण

अथ कामधेनु के विष्नुपदं कथ्यते--

राग भैरव १३३५९११७१

✓ × ✓ × ✓ × ✓ × ✓
श्री धराप बंसीधर राघव सुर लाये १,३,३,५,९,१,१,७,१
श्री रमाप बंसीधर [स्यामावर] उर गाये
श्री रघूप सीतापति जादव जिय आयैं
श्री कृपाल राधापति माधव प्रभु माये ।६५।

१--छंद के सामने दी हुई संख्या में ५ के ऊपर '×' का निशान लगा है और हाशिए में वैसा ही निशान लगाकर लिखा गया है--'या अंक को आदि अक्षर अंत वाचिबो'--इसका आशय है कि पाँचवे घटक में आने वाले ५ वर्णों में से घटक के आदि में आने वाले 'श्री' को घटक के अंत में पढ़ना चाहिए ।

राग रामकली टेक ११५३२१२७/४१७१२७

श्री बंसीधरे सुर लाइ ११,५,३,२,१,२,७ / ४,१७,१,२,७
(प्रथम पंक्ति) (अन्य पंक्तियाँ)

रमापते जदुपति स्यामावर वामने उर गाइ ।।१
रघूपते भवपति सीतापति जादवे जिय आंनि
कृपालये वृजपति राधापति माधवे प्रभु मांनि ।९६।।२

राग रामकली टेक ११०१४३३४२/८१३५४

श्री श्री राघवे मति धारि १,१०,१,४,३,७,४,१/[८,१३,५,४,१]
जदुपते स्यामावरे वामने उर मति टारि ।।१
भवपते सीतापते जादवे जिय सुविचारि
वृजपते राधापते माधवे प्रभु न विसारि ।९७।

राग बिलावल ११६१२४४१ / १२९१२७ / ८१११२ / ४२०६१ ।

सीधर राघव रति मति धारि
मावर वामन रति मति टारि ।।१
[१३,६,१,२,४,४,१]

बंसीधर राघव सुर लाइ
स्यामावर वामन उर गाइ
सीतापति जादव जिय आँनि
राधापति माधव प्रभु मांनि ।।२
१२,९,१,२,७

अमर श्री बंसीधर राघवे
जदुपति स्यामावर वामने
भवपति सीतापति जादवे
वृजपति राधापति माधवे ।।३
८,११,१२

श्री कृष्ण श्रि ररौ मति धारि
श्री गोविंद पलौ मति टारि
श्री वाराह भलौ सुविचारि
श्री गोपाल पलौ न विसारि ।९८।
४,२०,६,१

राग आसावरी[1] ११५१२२१ / ८८८२४.१
× ✓ × ✓ × / ✓ × ✓ × ✓ ×
रे मन श्री बंसीधर धारि ११,५,१२,२,१/८,८,८,२,४,१

श्री कृष्ण श्रि धरापति राघव सुरति लाइ मति धारि
श्री गोविंद रमापति वामन उरति गाइ मति टारि ।।१
श्री वाराह रघूपति जादव जियहि आंनि सुविचारि
श्री गोपाल कृपालय माधव प्रभुहि मांनि न विसारि ।९९।

राग आसावरी १६३१२४४१ / १७११३८१
× ✓ × ✓ × ✓ × / ✓ × ✓ × ✓ ×
राघव रति मति धारि रे मन० । १६,३,१,२,४,४,१/१,७,११,३,८,१

श्री अमर श्री वंसीधर राघव लाइ ररो मति धारि
श्री जदुपति स्यामावर वामन गाइ पलौ मति टारि ।।१
श्री भवपति सीतापति जादव आनि भलौ सुविचारि
श्री वृजपति राधापति माधव मानि पलौ न विसारि ।१००।

राग पंचम : १३२०२५
✓ × ✓ × ✓
१,३,२०,२,५

श्री धरापते अमर श्री बंसीधरे राघवे सुरति लाइ मति धारियैं
श्री रमापते जदुपते स्यामावरे वामने उरति गाइ मति टारियैं ।।१
श्री रघूपते भवपते सीतापते जादवे जियहि आँनि सुविचारियैं
श्री कृपालये वृजपते राधापति माधवे प्रभुहि मांनि न विसारियैं ।१०१।

राग सारंग ४३१८३२१८१
× ✓ × ✓ × ✓ × ✓ ×
४,३,१,८,३,२,१,८,१

धरप अमर श्री बंसीधर सुर लाइ ररौ मति धारि
कृष्ण सुर लाइ ररौ मति धारि ०/
रमप जदुपते स्यामावर उर गाइ पलौ मति टारि ।।१
रघूप भवपते सीतापति जिय आंनि भलौ सुविचारि
कृपल वृजपते राधापति प्रभु मानि पलौ न विसारि ।१०२।

१–राग आसावरी के दोनों उदाहरणों में 'रे मन' केवल गायकों की सुविधा के लिए दिया गया है, पद में उसकी आवश्यकता नहीं है ।

राग गौरी ४३१३१०१२७/४७११६

धरप·अमरति ररौ मति धरियैं ४,३,१,३,१०,१,२,७/४,७,१,१९

रमपति जदुप स्यामावर वामन उरति गाइ पलौ मति टरियैं ।।१

रघूपति भवपति[1] सीतापति जादव जियही आनि भलौ सुविचरियैं

कृपलय वृजप राधापति माधव प्रभुही मानि पलौ न बिसरियैं ।१०३।

राग काफी १३७५३४७१/१२४७७१

कृष्ण श्रि ति बंसीधर सुरति लाए १,३,७,५,३,४,७,१ / १२,४,७,७,१

श्री कृष्ण श्रि धरापति अमर श्री राघवे सुरति लाए

श्री गोविंद रमापति जदुपति वामने उरति गाए ।।१

श्री वाराह रघूपति भवपति जादवे जियहि आए

श्री गोपाल कृपाल [य] वृजपति माधवे प्रभुहि माए ।१०४।

राग मल्हार १२६५४१ / १२४५५४१

बंसीधर राघव सुर मति धारि १२,९,५,४,१ / १२,४,५,५,४,१

श्री गोविंद रमापति जदुपति वामन उर मति टारि ।।१

श्री वाराह रघूपति भवपति जादव जिय सुविचारि

श्री गोपाल कृपालय वृजपति माधव प्रभु न बिसारि ।१०५।

राग षट[2] ४३१३१७७५

श्री धरप अमर बंसीधर राघव मति धारियैं ४,३,१,३,१,७,७,५

रमप जदुप स्यामावर वामन मति टारियैं ।।१

श्री रघूप भवप सीतापति जादव सुविचारियैं

कृपल वृजप राधापति माधव न विसारियैं । १०६

१–'ति' नहीं होना चाहिए ।

२–राग षट में रेखांकित 'श्री' मंगलसूचक हैं, पद में उनकी आवश्यकता नहीं है ।

राग काफी　　　　　　　　　　　　१११०५५ / १२७३२७

श्री बंसीधर राघव सुर मति धारियैं　　११,१०,५,५ / १२,७,३,२,७
श्री कृष्ण श्रि धरापति अमर श्रि सुरति ररौ मति धारियैं
श्री गोविंद रमापति जदुपति उर तें पलौ मति टारियैं ।।१
श्री वाराह रघूपति भवपति जियहि भलौ सुविचारियैं
श्री गोपाल कृपालय बृजपति प्रभुहि पलौ न विसारियैं ।१०७।

राग परज　　　　　　　　　　　　११५३२५५ / ८८१५

श्री बंसीधर सुर मति धरियैं　　　　११,५,३,२,५,५ / ८,८,१५
श्री गोविंद रमापति वामन उरति गाइ पलु मति टरियैं ।।१
श्री वाराह रघूपति जादव जियहि आँनि भलो सुविचरियैं
श्री गोपाल कृपालय माधव प्रभुहि मानि पलौं न विसरियैं ।१०८ ।

राग बसंत　　　　　　　　　　　　　　१२७३२७

श्री[1] बंसीधर राघवे लाइ । स्यामावर वामने गाइ　　१२,७,३,२,७
सीतापति जादवें आँनि । राधापति माधवे मानि ।१०९।

इति कामधेनु के विष्णुपद सम्पूर्ण

फलस्तुति दोहा—

कामधेनु के छंद सव कहि कौ सकै गनाइ
लहे जथामति कहे ते सूरति सवनि सुनाइ ।१।
इते छंद कछु मैं कहे अपनी मति वल देषि
और हूँ अपने बुद्धि वल कविकुल लीजहु लेषि ।२।
अति रति मति धरि वांचियौ पावन सतनव छंद
रटत हटत अघ ताप त्रय मिटत कटत भव फंद ।३।

१—'श्री' मात्र मंगलसूचक है, पद में इसकी आवश्यकता नहीं है ।

काँमधेनु जो ग्रंथ कौं पढें गुनैं रति लाइ
च्यार पदारथ भजन सुख ताहि देत हरिराइ ।४।
यह कवि विप्र कनौजिया जांनहु सूरत नाम
नगर आगरें तिनि कियौ कामधेनु सुषधाम ।५।
सत्रह सैं उनसठ वरष माधव सुदि गुरुवारु
पुष्प सप्तमी कौं भयो कामधेनु अवतारु ।६।
सूरत कृत यह काम धुक सकल कामदा मित्र
ज्यौं ज्यौं पढैं वढैं भगति राधावर की चित्त ।११६।

इति श्री कामधेनु ग्रंथ सूरत कृत समाप्तं ।। शुभं भवतु सर्वयोर्ल्लेखक वाचकयोः श्री दरभावती नगरे श्री वल्लभेन ।।

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट—
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

सहायक ग्रंथों व पाण्डुलिपियों की सूची

ग्रंथ	लेखक	प्रकाशक
१—छंदःप्रभाकर	जगन्नाथ प्रसाद 'भानु'	जगन्नाथ प्रिंटिंग प्रेस, बिलासपुर
२—मिश्रबंधु-विनोद	मिश्रबंधु	गंगा पुस्तक माला, लखनऊ
३—राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज, प्रथम भाग	मोतीलाल मेनारिया	साहित्य संस्थान, राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर
४—शिवसिंह-सरोज, तृतीय संस्करण	शिवसिंह सेंगर	नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
५—सरोज-सर्वेक्षण	डॉ० किशोरीलाल गुप्त	हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
६—साहित्य-दर्पण	टीकाकार—शालिग्राम शास्त्री	श्री मृत्युञ्जय औषधालय, लखनऊ
७—हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथों का पन्द्रहवाँ वार्षिक विवरण	स० डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थवाल	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
८—हिन्दी काव्य-शास्त्र का इतिहास	डॉ० भगीरथ मिश्र	लखनऊ विश्वविद्यालय
९—हिन्दी-साहित्य का अतीत	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	वाणी वितान प्रकाशन, ब्रह्मनाल, वाराणसी
१०—हिन्दी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	नागरी प्रचारणी सभा, काशी
११—हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास	डॉ० सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन अनु० डॉ० किशोरीलाल गुप्त	हिन्दी प्रचारक, बनारस
१२—माधुरी पत्रिका		

लखनऊ, जनवरी १९२६ ई०

पाण्डुलिपि	मूल लेखक	प्राप्ति-स्थान
१—अलंकार माला	सूरति मिश्र	श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमन्दिर, पाटण
२—अलंकार रत्नाकर	दलपतिराम बंसीधर	लालभाई दलपतिभाई भारतीय विद्याभवन, अहमदाबाद
३—कृष्णचरित्र	सूरति मिश्र	म० स० विश्वविद्यालय, बड़ौदा
४—कामधेनु	सूरति मिश्र	श्री आत्माराम जैन ज्ञानमन्दिर, बड़ौदा
५—काव्य-सिद्धान्त	सूरति मिश्र	श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमन्दिर, पाटण तथा ला० द० भा० वि० भवन, अहमदाबाद
६—भक्ति विनोद	सूरति मिश्र	म० स० विश्वविद्यालय, बड़ौदा
७—रसरत्न	सूरति मिश्र	ला०द०भारतीय विद्याभवन, अहमदाबाद
८—रामचरित्र	सूरति मिश्र	म० स० विश्वविद्यालय, बड़ौदा ।